समर्पण ।

प्राणि मात्र के उद्धारक, सत्यधर्म्म
के प्रचारक जगत्कल्याणकारी,
आदित्य ब्रह्मचारी

प्रभु दयानन्द ।

जिनका सुयश संसार के प्रत्येक
पक्षपात रहित विद्वान् के हृदय
में निवास कर रहा है उन्हीं
सत्यव्रतधारी संतापहारी
दीनहितकारी महर्षि
के चरण कमलों में
भक्तिपूर्वक यह
तुच्छ पुस्तक
समर्पित
है ।

प्रभु का अनन्य शिष्य
रामचन्द्र प्रसाद

ॐ

भूमिका।

मसीही धर्म्म, यौरप और अमरीका के श्रद्धालु और पुरुषार्थी मनुष्यों के संगठित श्रम और लगातार विविध प्रकार के उपाय और उद्योग से, भारतवर्ष की जातियों को क्रमशः अपने गल्ले में मिलाता जारहा है। हिन्दू (आर्य्य) जाति की संख्या गिर रही है और इस जाति की उदासीनता और कर्मविहीनता संसार में अनुपम है।

आर्य्यधर्म्म, जो ऐतिहासिक प्रभात से आज दिन तक मनुष्य जाति को प्रकाश, आत्मबोध, पवित्रता और उन्नतिप्रदान करता चला आया है, यदि शिथिल है तो आर्य्यों की पुरुषार्थहीनता और उदासीनता का फल है;—नहीं तो यदि पक्षपात छोड़कर देखा जावे तो मसीही धर्म्म की सारी खूबियों को रखता हुआ भी आर्य्यधर्म्म (अर्थात् वैदिक धर्म्म) उसके दोषों से रहित है।

जिस तरह हमारे पतन का कारण आर्य्यधर्म्म नहीं है, उसी तरह पाश्चात्य देशों की उन्नति का कारण भी मसीही धर्म्म नहीं है। यह इतिहास बताता है कि मसीही चर्च ने विज्ञान को, स्वतन्त्र विचार को, स्त्रीजाति के अधिकार को, परमेश्वर की शुद्ध भक्ति और सत्कार को सदा तलवार, अग्नि, सूली और फ़र्मान से पैरों तले दलन किया है।

प्रत्येक सत्य विवेकियों की सेवा में और वैदिकधर्म्म के अनुयायियों और प्रचारकों के सहायतार्थ यह प्रथम भेंट अत्यन्त नम्रता और प्रेम से उपस्थित की जाती है। मैं आशा करता हूँ कि आप लोग इसकी त्रुटियों को क्षमा और इस तुच्छ भेंट को स्वीकार कर लेखक के परिश्रम और साहस को सुफल करेंगे।

इस पुस्तक के छपते समय पण्डित श्यामलालशर्माजी (साहित्याचार्य्य) प्रधान संस्कृताध्यापक गुरुकुल वृन्दावन ने प्रूफ़ संशोधन में बहुत सहायता दी है, इसलिए मैं उक्त आचार्य्यजी का अत्यन्त कृतज्ञ हूँ।

गुरुकुल वृन्दावन
ता० १६ फ़र्वरी १६१५ ई०

रामचन्द्रप्रसाद वर्म्मा

(आभास)

सुविज्ञानं चिकितुषे जनाय सच्चासच्च वचसि पस्पृधाते ।
तयोर्यत्सत्यं यतरदृजीयस्तदित् सोमोऽवति हन्त्यासत् ॥

अ० ८ । ४ । १२

" बुद्धिमान् सरलता से सच्चे और झूठे को पहचान लेते हैं, क्योंकि इनके वचनों में परस्पर विरोध होता है, इन दोनो में परमेश्वर सत्य और सत्यवक्ता की रक्षा करता है और असत्य और असत्यवादी का हनन करता है । "

—o—

" यीशू वहां से जाके अपने देश में आया और उसके शिष्य सब उसके संग होगये । विश्राम के दिन वह सभा स्थान में उपदेश करने लगा और बहुत से लोग सुनकर अचंभित हो बोले,—"कहां से इस मनुष्य ने ये बातें प्राप्त की हैं ? " मार्क पर्व्व ६ आ० १–२

—o—

"क्योंकि प्रभु आपही ऊंचे शब्द सहित प्रधान दूत (archangel) के शब्द सहित और ईश्वर की तुरही सहित स्वर्ग से उतरेगा और जो खीष्ट में मरे हैं वह पहिले उठेंगे । तब हम जो जीवित और बचे हुए हैं, एक संग उनके साथ प्रभु से मिलने को मेघों में आकाश पर उठालिये जायेंगे और इस रीति से हम सदा प्रभु के संग रहेंगे । " १ थिसा० पर्व्व ४ आ० १६–१७ ।

—ooo—

" यीशू ने उनसे कहा मैं तुमसे सच कहता हूं कि जो यहां खड़े हैं, उनमें से कोई कोई हैं कि जबलों ईश्वर का राज्य पराक्रम से आया हुआ न देखलें, तब लों मृत्यु का स्वाद न चखेंगे । "

मार्क पर्व ६ आ० १

—o—

" और जो खीष्ट नहीं जी उठा है तो हमारा उपदेश व्यर्थ है और तुम्हारा विश्वास भी व्यर्थ है । " १ कारिन्थ० पर्व्व १५ आ० १४

—o—

ईसाई-सिद्धान्त-दर्पण।

अध्याय १—पुरानी और नई इञ्जील में सम्बन्ध।

ईसाई धर्म्म पुस्तक दो भागों में विभक्त है। पहिले भाग को पुरानी इञ्जील और दूसरे भाग को नई इञ्जील कहते हैं। ईसाइयों के कथनानुसार ईसा के पूर्व जितने पैग़म्बर यहूदियों में होगये हैं, उनकी बनाई पुस्तकों के समूह का नाम पुरानी इञ्जील है जिसमें परमेश्वर की ओर से प्राप्त हुई आज्ञायें विशेष कर दर्ज कही जाती हैं और मसीह के पश्चात् मसीह के शिष्यों तथा अनुयायियों की बनाई पुस्तकों के समूह का नाम नई इञ्जील है, जिनमें ईसा का जीवन-वृत्तान्त उपदेशादि लिखे हुए हैं। ईसाइयों के मतानुसार पुरानी इञ्जील में मनुष्यजाति परमेश्वर की ओर से पैग़म्बरों के द्वारा क्रमशः इसलिये तैयार की जारही थी कि अन्त में चलकर परमेश्वर के निजपुत्र प्रभु मसीह का प्रादुर्भाव हो और मनुष्य पापों से छूट कर मोक्ष का अधिकारी बन सके।

नई और पुरानी इञ्जील में बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध है, इस बात से कोई समझदार ईसाई इन्कार नहीं कर सकता। नाना प्रकार के आक्षेपों से बचने के लिये कभी कभी ईसाई पादरी के मुख से यह निकल जाता है कि ईसाई धर्म्म को पुरानी इञ्जील से कोई मतलब नहीं, क्योंकि ईसाइयों की धर्म्मपुस्तक तो केवल नई इञ्जील है, परन्तु ऐसे पादरी महाशयों को भी, जैसा कि प्रत्येक ईसाई को, यह पूर्णतया मालूम है कि इन दोनों इञ्जीलों में अटूट सम्बन्ध है। इस घनिष्ठ सम्बन्ध को जानकर भी पुरानी इञ्जील से परहेज़ करने का क्या प्रयास होता है, यह इस पुस्तक में आगे चलकर स्वयम् सिद्ध होजावेगा। इस अध्याय में संक्षेपतः केवल

यह दिखलाया गया है कि नई और पुरानी इञ्जील में कितना बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध है। निम्नलिखित दलीलों से इस सम्बन्ध की पुष्टि होती है:—

(१) यहूदियों की पुरानी इञ्जील के आधार पर यह विश्वास है कि परमेश्वर की ओरसे उनको पराधीनता से रहित करने और सुखसाम्राज्य प्रदान करने के लिये उनकी जाति में दाऊद के वंश में एक महान् राजा का जन्म होने वाला है, ईसाइयों का यह दावा था और है, कि वह महान् आत्मा प्रभु मसीह हैं परन्तु मसीह के समय से आजतक यहूदियों ने मसीह को स्वीकार नहीं किया और अबतक यह लोग अपने राजा के आने की बाट देख रहे हैं।

(२) नई इञ्जील के चारों (अर्थात् मत्ती, मार्क, ल्यूक और जान के रचित) सुसमाचारों के अनेक स्थानों में और स्पष्ट शब्दों में पुरानी इञ्जील को प्रमाणित माना है, यहां पर कुछ ऐसे स्थानों की सूचना पाठकों के अवलोकनार्थ दीजाती है कि जिसमें उपर्युक्त कथन की पुष्टि होजावे।

मत्ती-रचित सुसमाचार :—१ (२२–२३); २ (५–६, ८-१५, १७ १८, २३); ३ (३); ४ (१४–१६) ८ (१७); १२ (१७–२१); १३ (३४–३५); १६ (१४); २१ (४–५); २७ (६, ३५).

मार्क-रचित सुसमाचार :—१ (१-३); ६ (४); ११ (६-१०); १५ (२८).

नोट—कोष्ठक के बाहर के अङ्क तो पर्व-सूचक और कोष्ठक के भीतर के अङ्क आयतसूचक हैं।

ल्यूक-रचित सुसमाचार :—१ (६७–७६) ; २ (२२–२४); ३ (४–६) ; ४ (१०) ; ६ (३०) ; १६ (६) ; २४ (२७).

जान-रचित सुसमाचार :—१ (१७); ७ [४१–४२, ५२], १२ [१४–१६, ३७–४१], १६ [२४, २८, ३६–३७]; २० (६).

(३) प्रभु मसीह के निज मुख से निकले हुए अनेक वाक्यों से पुरानी इञ्जील का प्रामाणिक होना सिद्ध होता है :—

मत्ती-रचित सुसमाचार :—४ [४, ७, १०] ; ५ [१७–१६] ; १० (१५) ; ११ [१०–११, १३-१४], १२ [३६-४०] , १३ (१४) , १६ [४], १६ [१७-१६), २१ [१३, १६, ४५],२६ [२४, ३१–३२, ५३-५६]

मार्क-रचित सुसमाचार :—२ [२५–२८], ६ (११), ७ [६-१३), ६ (११–१३), १० [३–५] ११ [१७], १२ [२४–२७, ३६-३७] १३ (१४), १४ (२१, २७, ४६).

ल्यूक-रचित सुसमाचार :—४ [४, ८, १२, १७–२१, २४–२७); ५ (१४), ६ [३–४], ७ (२७); १० (१२–१५, २६] , ११ [२६–३२, ४८–५१) , १३ [२८-२६, ३४] , १६ (१६-१७ , ३१] , १७ [२६-३१), १८ (१८-२० , ३१), १६ (४६), २० (३७–३८, ४१-४४), २१ (२४).

जान-रचित सुसमाचार :—३ (१४), ५ (३६ ; ४५-४७), ६

(४५), ७ (१६, २२); ८ (५६), १३ (१८).

(४) विद्वन्मण्डली की भी यही सम्मति है कि "प्रभु मसीह और उनके शिष्यों का धर्म्मग्रन्थ केवल पुरानी इञ्जील थी और प्रभु मसीह और उसके शिष्य इसी ग्रन्थ से साधारणतया सन्तुष्ट थे"। *

(५) समस्त संसार के मसीही चर्च (गिरजे) पुरानी और नई इञ्जील के इस घनिष्ठ सम्बन्ध को स्वीकार करते हैं और इसी स्वीकृत मन्तव्यानुसार दोनों इञ्जीलों को साथ पाठ करते, बेंचते और सहस्त्रों की सख्या में बांटते हैं।

(६) ईसाई धर्म्म के प्रसिद्ध प्रचारक सेन्टपाल के शब्दों से "क्यों कि जैसे आदम में सब लोग मरते हैं वैसे ही मसीह में सब लोग जिलाये जावेंगे।" + अब यह वाक्य 'पाल' का विस्तृत रुप में इस प्रकार स्पष्ट किया जासकता है:—

१—पुरानी इञ्जील परमेश्वर की ओर से लिखी हुई है (अथवा आसमानी किताब है) और जगत् और मनुष्य की उत्पत्ति का वृत्तान्त जो इसमें दिया है वह संम्पूर्ण सत्य है।

२—इस वृत्तान्तानुसार, भौतिक-विश्व, पृथिवी, सूर्य्य, चन्द्र, नक्षत्र और सागर के सम्पूर्ण जीवधारी छः दिन में परमेश्वर ने बना कर सातवें दिन विश्राम किया।

---

* "The Bible of Jesus and his disciples was the old Testament. And both Jesus and his disciples were to all appearance content with this" See Ency. Britt XI th Edition Vol III pp 872.

+ "For as in Adam all die, So in Christ shall all be made alive," 1 Corin XV–22.

३—प्रथम पुरुष 'आदम' परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया और पहिली स्त्री 'ईव' के साथ अदन की वाटिका में रक्खा गया जहां कुछ काल तक यह दोनों निरपराध रहे और बहुधा परमेश्वर से साधारणतया वार्तालाप भी करते रहे।

४—केवल एक आज्ञाभङ्ग से यह उस उच्च स्थान से गिर पड़े और वाटिका से निकाल दिये गये और उन पर और उनके भावी सन्तानों पर पाप और मृत्यु, दण्ड के तौर पर, लगा दिये गये।

५—बहुत काल व्यतीत होने के पश्चात् जब कि मनुष्य-जाति इस शाप में पड़ी रही, परमेश्वर ने अपना पुत्र भेजा, जिसने मनुष्य का शरीर ग्रहण किया और सूली पर प्राण निछावर करके परमेश्वर का क्रोध शान्त किया, अर्थात् शाप दुर किया और स्वयं मरने के तीसरे दिन जी उठने से तथा उन मनुष्यों को जो उस पर विश्वास लाये या लावेंगे, अमरजीवन प्रदान करने से अन्तिम शत्रु मृत्यु का नाश कर दिया।

उपर्युक्त एक मुकम्मल ईसाई धर्म्म का सिद्धान्तरूपी ज़नजीर है, जिसकी कोई कड़ी निकाली नहीं जासकती। इसी सिद्धान्त पर ईसाई लोग प्रारम्भ से विश्वास करते चले आये हैं और इसीके सामने लूथर, क्रामवेल, मिलटन, स्काटलैन्ड के प्रसबिटीरियन्स और इङ्गलैन्ड के प्युरिटन्स और सभी दुनियां के ईसाई चर्च सर झुकाते हैं।

उपर्युक्त प्रमाणों से यदि पक्षपातरहित विचार किया जावे, तो

यह पूर्णतया सिद्ध हो जाता है कि जब तक नई इञ्जील प्रचलित है, तब तक मसीह पर विश्वास रखने वाले ईसाइयों को पुरानी इञ्जील पर विश्वास रखना ही पड़ेगा। पादरी महाशय बाज़ारों में, मेलों में, कालेज और स्कूलों में, होस्टलों में अथवा अपने पुस्तकों और व्याख्यानों में अपने श्रोताओं को केवल नई इञ्जील की सैर कराते हैं, परन्तु पुरानी इञ्जील की मायावी दुनियां से येन केन प्रकारेण उनको अलग रखने का अत्यन्त प्रयत्न करते हैं।

जब कि स्वयम् नई इञ्जील और शान्ति के स्वरूप प्रभु मसीह अपने मुखारविन्द से पुरानी इञ्जील को प्रामाणिक मानते हैं तो नई इञ्जील अथवा प्रभु मसीह के अनुयायी किस प्रकार अपने को अनुयायी कहते हुवे उसे अप्रामाणिक मान सकते हैं? यही कारण है कि आज बीस शताब्दी व्यतीत होजाने पर भी "इञ्जील" शब्द से "पुरानी और नई" इञ्जील दोनों गृहण की जाती हैं। ईसाई दुनियां के प्रसिद्ध कवियों, पादरियों, राजाओं और योद्धाओं ने दोनों इञ्जीलों के सम्मुख अपना सर झुकाया है और हर देश के चर्च विना किसी अपवाद के पुरानी और नई दोनों इञ्जीलों को प्रामाणिक धर्म्म गृन्थ एक स्वर से मानते हैं। ऐसी दशा में यदि यह कहा-जावे कि पुरानी और नई इञ्जील में अटूट सम्बन्ध है और एक की सत्यता और अस्तित्व दूसरी की सत्यता और अस्तित्व पर निर्भर है तो कुछ अनुचित नहीं।

अध्याय २—पुरानी इञ्जील (इसके रचयिता और रचना का समय)

पुरानी इञ्जील में ३९ पुस्तकें शामिल हैं जो उत्पत्ति की पुस्तक (Genesis) से प्रारम्भ होकर "मलाकी भविष्यद्वक्ता" की पुस्तक तक समाप्त हो जाती हैं। यहूदी, ईसाई और मुसलमान तीनों इन पुस्तकों को आसमानी किताब मानते हैं। यहूदियों की धर्म्मपुस्तक

केवल पुरानी इञ्जील है और उनके विश्वासानुसार उनका आखिरी पैग़म्बर (अथवा राजा) अभी पैदा होने वाला है। ईसाइयों की धर्म्मपुस्तक पुरानी इञ्जील के अतिरिक्त नई इञ्जील भी है, जिनमें प्रभु मसीह द्वारा अन्तिम सन्देश परमेश्वर की ओर से प्राप्त हुए हैं, क्योंकि इनके विश्वासानुसार पुरानी इञ्जील में परमेश्वर मनुष्य-जाति को क्रमशः इसलिये तैयार कर रहा था कि जिसमें अपने इकलौते पुत्र प्रभु मसीह को दुनियां में अन्तिम उपदेश और प्राणिमात्र को एकमात्र मुक्ति के साधन प्रस्तुत करने के लिये भेजे। मुसलमान लोग नई और पुरानी इञ्जीलों के अतिरिक्त "कुरान" को अन्तिम आसमानी किताब और मोहम्मद साहिब को अन्तिम पैग़म्बर मानते हैं।

अब पुरानी इञ्जील की पुस्तकें किसने और कब बनाईं, यह प्रश्न हमारे सामने उपस्थित है। इस प्रश्न का उत्तर दो भिन्न पक्षों से दो तरह का मिलता है। एक पक्ष तो अन्धविश्वास का है और दूसरा तर्क और बुद्धि का। अन्धविश्वास की गोद में पक्षपात पलता है और मनुष्य-जाति का इतिहास इसकी भयंकर कर्तूतों की साक्षिता दे रहा है, परन्तु बुद्धि की गोद में सचाई पलती है, जिस को तीन काल में भी कोई मार या दबा नहीं सकता। इन दोनों पक्षों के उत्तर को संक्षेपतः यहां लिखा जाता है, पाठक महाशय स्वयम् विचार लें कि ठीक उत्तर किस का है:—

प्रथम की छः पुस्तकें—इन छः पुस्तकों में प्रथम पांच "मूसा" की (जो १४५१ पूर्व ईस्वी में उत्पन्न हुए थे) और छठी किताब यहूशुआ की (जो १४२६ पूर्व ईस्वी में मरे थे) बनाई कही जाती हैं। विश्वास का पक्ष यह है कि प्रथम पांच पुस्तकें मूसा-द्वारा और छठीं पुस्तक यहूशुआ-द्वारा मनुष्य जाति को प्राप्त हुईं, परंतु दूसरा पक्ष स्वयम् पुरानी इञ्जील और अपनी ऐतिहासिक अनुवेषणाओं के आधार पर यह कहता है कि न तो प्रथम पांच

पुस्तकें मूसा की बनाई हैं और न छठी पुस्तक यहूशुआ नबी की रची हुई है । प्रथम पक्ष का कार्य्य तो केवल कह देना है परंतु निम्न लिखित प्रमाण दूसरे पक्ष की सिद्धि में पेश किये जाते हैं:—

(१) ये पुस्तकें स्वयम् कहीं नहीं कहते कि इनके रचयिता मूसा अथवा यहूशुआ है फिर किसके शहादत पर और क्यों मानलिया जावे कि मूसा अथवा यहूशुआ ने इनको लिखा ।

(२) पांचवीं पुस्तक (Deuteronomy) के पर्व ३४ में मूसा की मृत्यु और गाड़े जाने का हाल लिखा है, इसके अतिरिक्त इसी पर्व के आ० ५ और ६ में यह लिखा है "सो परमेश्वर का सेवक मूसा परमेश्वर के वचन के समान वहां मोअब के देश में मरगया और उसने * उसे मोअब के देश की तराई में बैतफ़ाऊर के सामने गाड़ा पर आज के दिन लों कोई उसकी समाधि को नहीं जानता"— अब यदि मूसा रचयिता होते तो अपने मरने और गाड़े जाने का हाल कदापि नहीं लिख सकते थे—और इस पक्ष की सिद्धि "आज के दिनलों" शब्द से भी पूर्णतया होती है और इन्हीं शब्दों से यह भी पता लगजाता है कि मूसा को मरे हुए बहुत काल व्यतीत हो चुका जब कि यह पुस्तक बनी ।

(३) प्रथम पुस्तक [Genesis] के पर्व १४ में लिखा हुआ है कि अबिराम को जब लूत के पकड़े जाने की ख़बर मिली तो उसने अपने आदमियों को जुटा कर शत्रु का पीछा "दान" स्थान तक किया, अब सातवीं पुस्तक [Judges] के पर्व १८ में लैस-वालों का दान-वालों से लूटा जाना लिख कर २९ आयत में यह लिखा है:— "और उस नगर का नाम दान रक्खा जो उनके पिता इसराईल के बेटे का नाम था परन्तु पहिले उस नगर का नाम लैस था"—

* यहां शब्द "उसने" किसके लिये प्रयुक्त किया गया है कुछ पता नहीं ।

सामसन की मृत्यु के पश्चात् ही यह घटना हुई थी, और सामसन ११२० पूर्व ईस्वी में मरा जो इसी पुस्तक के पर्व १७ से स्पष्ट सिद्ध है—यदि मूसा इस पुस्तक को लिखे होता तो "दान" नगर का नाम इस में कदापि नहीं आसकता था जो उसके ३३१ वर्ष पश्चात् बसाया गया।

(४) प्रथम पुस्तक (Genesis) के पर्व्व ३६ आ० ३१ में लिखा है " और जो राजा कि अदून देश पर राज्य करते थे उस से पहिले कि इसराईल के वंश का कोई राजा हुआ उनके नाम ये है " अब इन शब्दों से "उससे पहिले कि इसराईल वंश का कोई राजा हुआ " यह साफ़ पता लगजाता है कि, यही नहीं कि इस पुस्तक को मूसा ने नहीं बनाई परन्तु यह किताब उस समय लिखी गई जब कि इसराईल वंश के कम से कम दो तीन राजा तो हो ही चुके थे अर्थात् साल राजा [१०६५ पूर्व ईस्वी] अथवा दाऊद राजा (१०६३ पूर्व ई०] के समय बहुत पश्चात् ही यह पुस्तक जो उत्पत्ति की पुस्तक कही जाती है, लिखी गई। तो फिर मूसा का बनाया हुवा इस किताब को कहना अत्यन्त अनर्थ है।

(५) यात्रा की पुस्तक (Exodus) के पर्व १६ आ० ३५ में लिखा है " और इस्माइल की संतान चालीस वर्ष जब तक कि वह वस्ती में न आई ' मन्न ' खाती रही जब तक कि वह कनआन की भूमि के सिवाने में न आई मन्न खाती रही।" अब यहूशुआ की पुस्तक के ५ बाब १२ आ० में यहूशुआ * जो मूसा का उत्तराधिकारी था अपने समय में इसराईल के पुत्रों का कनआन में प्रवेश करना और मन्न खाना छोड़ना लिखता है। अतः इस से यह सिद्ध हो जाता है कि मूसा ने यात्रा की पुस्तक नहीं बनाई।

(६) तीसरी पुस्तक (Leviticus) में भी " और परमेश्वर

* यदि यह भी मान लें कि छठी पुस्तक यहूशुआ ने बनाई।

मूसा से यह कह कर बोला " इसी वाक्य से प्रत्येक पर्व प्रारम्भ होता है और सारी पुस्तक में भिन्न भिन्न प्रकार की कुर्बानी का व्यौरा है। यह पुस्तक भी मूसा की बनाई नहीं है जैसा कि प्रारम्भिक वाक्य से और विद्वानों की राय से स्पष्ट होता है।

(७) यहूशुआ के पर्व २४ आ० ३१ में लिखा है " और इसराईल यहूशुआ के जीवन भर और प्राचीनों के जीवन भर जो यहूशुआ के पीछे जीये और परमेश्वर के समस्त कार्य्य को जो उसने इसराईल के लिये किया जानते थे परमेश्वर की सेवा करते रहे।

यहूशुआ के पर्व्व १० आ० १४ में यह बयान होने के पीछे कि यहूशुआ की आज्ञा से सूर्य्य और चन्द्र आकाश में स्थिर होगये यह लिखा है कि " और उस दिन के सदृश कभी कोई दिन न पहिले हुआ था और न उसके बाद कभी हुआ जब कि परमेश्वर ने मनुष्य की आवाज़ को माना हो "

यहूशुआ के पर्व्व ८ आ० २८, पर्व्व १० आ० २७ तथा पर्व १५ आ० ६३ में शब्द " आज दिन तक " आया हुवा है।

ऊपर के प्रमाणों से लेशमात्र भी सन्देह नहीं किया जा सक्ता कि यह पुस्तक यहूशुआ की बनाई हुई नहीं है।

अब आजकल के प्रसिद्ध प्रसिद्ध विद्वानों की राय * यह है कि प्रथम पांचों पुस्तकें और यहूशुआ के नाम की छठीं किताब चार अनजान पुरुषों ने भिन्न कालों में (जो ६ वीं सदी पूर्व ईसा से प्रारम्भ होकर ५ वीं सदी पूर्व ईसा तक समाप्त होती है) बनाया है। इन पुरुषों का कालानुसार आनुमानिक नाम, उनकी लेखनशैली के आधार पर, विशेष अक्षरों से रक्खा है।

१—महाशय " ज "—इस का नाम " ज " इस कारण पड़ा कि इस लेखक ने परमेश्वर का नाम यहवेह अर्थात् " जेहोवा "

* यह संक्षेप व्यौरा इन्सा० ब्रिटा० [नई एडीशन] जिल्द ३ के निबन्ध " बाईबिल " से लिया गया है।

सदा प्रयुक्त किया है। इसने ६ वीं सदी पूर्व ईसा में इसराईल जाति के प्रचलित रवायतों को लेखबद्ध किया। निम्न स्थान इन पुस्तकों में इसका लिखा हुआ है:—

उत्पत्ति पुस्तक (Genesis):–२ (४)–३ (२४); ४; कुछ हिस्सा ६–८; ११ (१–६); १२; १३, १८१६,२४, २७ [१–४५], ३२, ४३, ४४;

यात्रा की पुस्तक :—बहुत हिस्सा ४–५, ८ (२०]–६ [७] १० [१–११], ३३ [१२]–३४ (२६)

गिन्ती की पुस्तक :—(Numbers) १० [२६–३०], बहुत हिस्सा ११.

२—महाशय "ए" इस लेखक का नाम "ए" इस कारण पड़ा कि इसने परमेश्वर का नाम "एलोहम" सदा प्रयुक्त किया है—यह पुरुष स्पष्ट है कि उत्तरी रियासत का रहने वाला था—इसने उत्तरी इसराईल में जो रवायते प्रसिद्ध थीं उनको "ज" के काल से कुछ पीछे लेखबद्ध किया–निम्न स्थान इसका लिखा हुआ है :—

उत्पत्ति की पुस्तक :—१५ (इबराहीम की जीवनी), २० (१–१७), २१ [८–३२], २२ [१–१४],४०–४२, ४५.

यात्रा की पुस्तक :—१८, २०–२३ ; ३२, ३३ (७–११)

गिन्ती की पुस्तक :—१२, बहुत हिस्सा २२–२४ (बालाम का वृत्तान्त)

यहूशुआ की पुस्तक :— २४.

३—महाशय "जए"–इस लेखक का नाम "जए" इस कारण पड़ा कि इसने अपनी जाति का एक विस्तृत इतिहास ७२२ पूर्व ईस्वी के पश्चात् तैयार करने के अभिप्राय से 'ज' के और "ए"के लेखों को मिला दिया और कहींकहीं कुछ अपनी ओर से भी मिला दिया–तत्पश्चात् सातवीं सदी पूर्व ईस्वी में पांचवी पुस्तक इस "जए"के वृत्तान्त में मिला दिया गया, परन्तु किसने मिलाया यह

नहीं कहा जासकता—

४—महाशय "प"—अन्त को एक पुरोहित संस्था ने ५३७ पूर्व ईस्वी के पश्चात् लगभग एक सौ वर्ष के अंदर अंदर कुछ वृत्तान्त कर्मकाण्ड, यज्ञ, शुद्धि, पुरोहिताधिकार इत्यादि के विषय में जो उस समय प्रचलित थे लेख-बद्ध किया—इस "प" की विशेष विलक्षणता यह है कि इसका लेख नामों, कुर्सीनामों और तिथियों से भरपूर है-निम्न स्थान "प" की लिखी हुई है:—

उत्पत्ति की पुस्तक :—१ (१)-२(४); १७, २३ (गुफ़ा की ख़रीद), २५ (७-१७) ४६ (६-२७)

यात्राकी पुस्तक :—६ (२)-७ (१३); २५-३१; ३५—४०.

लिवाईटीज़ :——सारीकिताब.

गिन्ती की पुस्तक :—१ (१)-१० (२४); १५-१८, १६, २६-३१, ३३-३६.

यहूशुआ की पुस्तक :—५ (१०-१२), विशेष हिस्सा १५-१६, २१ (१-४२).

अन्त को ५ वीं शताब्दी पूर्व ईस्वी में इस "प" की सम्पूर्ण रचना "जए" और विवाद की पुस्तक (Deuteronomey) में मिला दिये गये और इस प्रकार आज कल की पांच प्रथम पुस्तकें (जिनको विना कारण मूसा-कृत कहाजाता है) और छठी पुस्तक (जिसपर योंहीं यहूशुआ का नाम लगा दिया है) तयार होगई।

इस तरह जबकि उपर्युक्त प्रमाणों और विद्वन्-मण्डली की अन्वेषणाओं से यह सिद्ध होगया कि प्रथम पांच पुस्तकें [जिनको Pentatench कहते हैं] मूसा की बनाई नहीं हैं और न छठी पुस्तक यहूशुआ की बनाई हुई है और जबकि लेशमात्र भी इन पुस्तकों के कर्ताओं का पता नहीं है और न चल सक्ता है तो पाठक महाशय स्वयम् विचार लेवें कि इन पुस्तकों का क्या प्रमाण रह गया और क्यों कोई ऐसे गुमनाम पुस्तकों पर विश्वास करे विशेषकर जबकि

इनमें बहुत अधिक संख्या अनुचित और अश्लील कथाओं की, जो दूसरे अध्याय में लिखी जावेंगी, मिली हुई हैं।

ख.—न्यायियों, सामुयल और राजाओं की पुस्तक.

[१] न्यायिओं की पुस्तक [Judyes] सातवीं किताबः— इस पुस्तक को किसने बनाया यह स्पष्ट नहीं होता और न तो यह पुस्तक अपने रचयिता के नाम का संकेत मात्र भी देता है परन्तु इसके पढ़ने से मालूम होता है कि इस का रचयिता विवाद की पुस्तक [Deuteronomey] से बहुत प्रभावित हुआ है अतः "इसका रचयिता, जो कोई भी हो ६०० वर्ष पूर्व ईस्वो के पहिले नहीं होगा" × —इसके अतिरिक्त पर्व १ आ० ८ में "यरुशलम" पर युद्ध करने के विषय में है इससे भी स्पष्ट सिद्ध होजाता है कि दाऊद के शासन के पश्चात् यह पुस्तक लिखी गई क्योंकि यरुशलम दाऊद के समय के पूर्व नहीं लिया गया था * और दाऊद का शासन यहूशुआ की मृत्यु के ३७० वर्ष पश्चात् शुरू हुआ था परन्तु यह पुस्तक अपनी कथा यहूशुआ की मृत्यु के बाद ही प्रारम्भ कर देती है [देखिये पुस्तक]

[२] सामुयल की दो पुस्तकें—नवीं और दसवीं किताब— यह दोनों पुस्तकें सामुयल की बनाई कही जाती हैं परन्तु यह दोनों पुकार २ कर कहती हैं कि हमको सामुयल ने नहीं बनाया या सामुयल का उत्तराधिकारी 'साल' था और 'साल' का उत्तराधिकारी दाऊद था सामुयल की पहिली पुस्तक पर्व २८ में साल

× "the compiler is strongly. imbued with the spirit of Deuteronomey.............The compiler will not have written before 600 B. C" Ency. Brit Vol III, pp 852.

* दाऊद का यरुशलम लेना २ सामूयल पर्व ४ आ० ४ तथा १ क्रानि० पर्व १४ आ० ४ में दिया है इसके पहले यरुशलम का लिया जाना पुरानी इञ्जील में कहीं नहीं लिखा—

की एक स्थानीय स्त्री की सहायता से सामुयल के रूह का बुलाया जाना लिखा है [देखिये पुस्तक] और इसी पुस्तक के पर्व २५ में सामुयल का मरना और गाड़ा जाना लिखा हुआ है।

सामुयल की दूसरी पुस्तक दाऊद के शासन वृत्तान्त से प्रारम्भ होती है और उसमें उसके शासन समय के अन्त तक की कथायें लिखी हुई हैं इन दोनों प्रमाणों से यह सिद्ध हो गया कि ये दोनों पुस्तकें सामुयल की बनाई हुई नहीं हो सकतीं उन्हें उसको बनायी कहना केवल अज्ञानता हैं।

[३] राजाओं की दोनों पुस्तकें—११वीं और १२ वीं पुस्तक—इन पुस्तकों को किसने और कब बनाया यह कुछ पता नहीं, पहिली पुस्तक सुलैमान राजा [१०१५ वर्ष पूर्व ईस्वी] के शासन काल से प्रारम्भ होता है और दूसरा पुस्तक "ज़देकियाः" राजा के शासन तक (५८८ पूर्व ईस्वी) समाप्त होजाती है। इस प्रकार ये दोनों गुमनाम पुस्तकें परमेश्वर की प्यारी जाति (Chosen people) के राजाओं का इतिहास ४२७ वर्ष का देती हैं।

ग—काल के समाचार की दो किताबें (Chronicles)

१३ वीं और १४ वीं पुस्तक

ये दोनों पुस्तकें भी अपने रचयिता का कुछ पता नहीं देतीं पहिली पुस्तक (अपने प्रारम्भिक ६ पर्वों में "आदम" से 'साल' तक का कुर्सीनामा देकर) दाऊद के शासनकाल से प्रारम्भ होती है और दूसरी पुस्तक का अन्त, राजाओं की दूसरी पुस्तक के सदृश, ज़देकिया के शासन तक समाप्त होता है।

विद्वानों की यह सम्मति है कि ये दोनों पुस्तकें सामुयल तथा राजाओं की पुस्तकों के आधार पर ३०० वर्ष पूर्व ईस्वी के थोड़े ही पहिले लिखी गई।

५०—इसाया, ज़ेरीमियाह व इज़कील की पुस्तकें
(२३, २४ व २६ वीं पुस्तक)

इसाया की पुस्तक इसाया की लिखी नहीं है, इसका स्पष्ट प्रमाण यह है कि ४४ पर्व्व की अन्तिक आयत और ४५ पर्व्व की पहिली आयत मिला कर पढ़ने से पता लग जाता है कि इन दोनों पर्व्वों में साईरस राजा की प्रशंसा है, जिसने यहूदियों को बाबीलोनियां की क़ैद से मुक्त करके ज़रूशुलम और मन्दिर को फिर से बसाने और बनाने की आज्ञा प्रदान की। अब इञ्जील के अनुसार इसाया, हिज़ेकिया की मृत्यु के पश्चात् शीघ्र ही मरा और हिज़ेकिया ६६८ वर्ष पूर्व ईस्वी में मरा और इसी इञ्जील के अनुसार ज़रूशुलम वापस जाने की आज्ञा साईरस ने ५३६ पूर्व ईस्वी में प्रदान की। इससे यह स्पष्ट प्रतीत होजाता है कि इसाया की मृत्यु के १५० वर्ष पश्चात् यह पुस्तक इसाया के नाम से बनी; और विद्वानों की तो यह राय है कि ५३६ पूर्व ईस्वी के बहुत पश्चात् बनी +

ज़ेरीमियाह के नाम की पुस्तक भी ज़ेरीमियाह की लिखी हुई नहीं है, परन्तु विद्वानों की यह राय है, कि "भविष्यद् वाणियां और कथायें जो इसमें हैं, वे क्रमशः इकट्ठी की गई और यह उपस्थित आकार इसने कई दर्जों से गुज़र कर ग्रहण किया; जिनकी पूर्त्ति इसराईल के बाबिलन से वापस आने के बहुत काल पश्चात् हुई" ×

इज़ाकील—इस पुस्तक की पेशीनगोइयों पर विचार

+ "It is evident from these facts that the books of Isaiah did not assume its present form till considerably after the return of the Jews from exile in 537 B.c." Ency. Britt vol III p. 855

× "The prophecies and narratives contained in it were collected together gradually, and it reached its present form by a succession of stages wheih were not finally completed till long after Israels return from Babylon" Ency. Brit. vol III. p. 855

करने से विद्वानों की राय है कि इसका लेखक एक ही मनुष्य है और बहुत सम्भव है कि इज़ाकील नबी स्वयम् हों।

च–एज़रा की और निहेमियां की किताब (१५ वीं व १६ वीं किताब)—

इन दोनों पुस्तकों की बनावट काल के समाचार की किताबों के आधार और सिलसिले पर है। ये दोनों पुरुष क़ैद-यात्रा से लौट कर आए थे और सम्भव है कि इन्होंने कुछ विषयों का वृत्तान्त लिखा हो और उसके आधार पर ये पुस्तकें रची गई हों। यद्यपि इन दोनों पुरुषों के किसी ऐसे वृत्तान्त लिखने का प्रमाण उपस्थित नहीं है, तथापि अधिक से अधिक यही कहा जासकता है कि यदि इन्होंने कोई ऐसा वृत्तान्त लिखा था तो कुछ आश्चर्य नहीं कि उपस्थित पुस्तक उसीके आधारपर लिखी गई हो। ऐसी ही राय विद्वानों की भी है। निहेमिया की पुस्तक के विषय में तो विद्वानों की यह राय है कि "निहेमिया की पुस्तक के ऐतिहासिक संकेतों से यह नतीजा निकाला जा सक्ता है कि संग्रह-कर्ता ने लगभग ३०० पूर्व ईस्वी में लिखा" ×

छ–सुलैमान की गीतपुस्तक रूतकी, विलाप की, उपदेशक की (Ecclesiastes) और अस्तर की पुस्तकें (२२ वीं, ८ वीं, २५ वीं, २१ वीं, और १७ वीं पुस्तकें)

(१) सुलैमान की गीत-पुस्तक को १०१४ पूर्व ईस्वी का समय, जबकि सुलैमान जीवित थे, इञ्जील में दिया गया है, परन्तु जब मूसा की पुस्तकों को इस प्राचीनता

× "From historical allusions in the book of Nehemiah, it may be inferred that the compiler wrote at about 300 B.c. " En., Br. vol III. p. 855.

का गौरव प्राप्त नहीं है, तो इस पुस्तक का क्या कहना है। विषय इस पुस्तक में क्या है, यह तो पीछे लिखा जावेगा, परन्तु एक भी विद्वान् इसे इतना पुराना और सुलैमान रचित नहीं बताता; क्योंकि "अधिकतर हाल के विद्वान्, विशेषकर कुछ हाल के वाक्य इसमें होने के कारण, यह अनुमान करते हैं कि यह तीसरी अथवा चौथी शताब्दी पूर्व ईस्वी से पहिले नहीं लिखी गई +

(२) रूत की पुस्तक—इस पुस्तक को किसने और कब बनाया, इसका कुछ पता नहीं। इसका समय इञ्जील में १३२२ पूर्व ईस्वी दिया हुआ है, परन्तु यह प्रमाण-रहित है। ड्राइवर की यह सम्मति है कि वनवास (Exile) के पूर्व यह पुस्तक बनी; "परन्तु आजकल के विद्वानों की यह आम राय है कि यह पांचवीं सदी पूर्व ईस्वी में बनी।" ×

(३) विलाप की पुस्तक—ज़रूशुलम के पतन के शोक में यह पुस्तक लिखी गई है। इसमें उन आपदाओं का ब्यौरा है, जो इसके पतन के कारण इसके निवासियों को सहन करनी पड़ीं, और केवल इसी अनुमान से विद्वानों की यह राय है कि यह ५८६ पूर्व ईस्वी के बहुत पश्चात् नहीं बनी।

(४) उपदेशक की पुस्तक का समय ९७७ पूर्व ईस्वी इञ्जील में दिया गया है और दाऊद के पुत्र [जो अपने को इसराइल जाति का यरूशुलम में राजा होना बताता

+ "But most recent scholars, on account chiefly of certain late expressions occurring in it, think that it can not have been written earlier than the 4 th. or 3 rd. century B. C." En. Br. vol. III p. 854

× "Driver has defended a pre-exilic date for it, but the general opinion of modern scholars is that it belongs to the 5 th. century B. C." En. Br. vol III p. 854.

है *] सुलैमान का बनाया कहा जाता है। भाषा की शैली पर विचार करने से यह पुस्तक इबरानी संग्रह में सब से बाद की होनी चाहिए और विद्वानों की यह राय है कि यह किताब यूनानी काल में तीसरी सद्दी पूर्व ईस्वी के अन्तिम भाग में लिखी गई +।

[५] अस्तर की किताब इञ्जील के कथनानुसार ५२१ पूर्व ईस्वी में बनी, परन्तु कुछ विद्वानों की यह राय है कि यह पुस्तक चौथी सदी पूर्व ईस्वी के अन्तिम भाग से पूर्व की नहीं है और बहुत विद्वान् इसको और भी हाल की समझते हैं ×।

ज०—एयूब(Job). गीत [Psalms] और दृष्टान्त [Proverbs] की पुस्तकें १८ वीं, १६ वीं, और २० वीं किताब।

[१] एयूब की पुस्तक को इञ्जील १५२० पूर्व ईस्वी का काल प्रदान करता है और एयूब की बनाई बताता है; परन्तु दोनों कथन प्रमाणरहित हैं | इसके रचयिता का अथवा इसकी रचना के समय का पता जहां तक लग सका है, वह यह है कि यह पुस्तक एयूब के नाम में बनवास से लौट आने के पश्चात बनी (देखिये Ency. Br. का निबन्ध

---

* पर्व्व १ आ० १.

+ "Upon linguistic grounds, Ecclesiastes must be one of the latest books in the Hebrew canon. It was most probably written during the Greek period towards the end of 3 rd. century B. C." En. Br. volIII p. 854

× "This book will not be earlier than the closing years of the 4 th. century B.C, and is thought by many scholars to be even later" En. Br. vol III p. 854

"Job" पर) पुरानी इञ्जील में यही एक पुस्तक है, जिसका विषय, कुछ बातों को छोड़कर, जो पीछे लिखा जावेगा, गम्भीर है। मनुष्य-जीवन की घटनाओं पर बहुत से प्रश्नों को उठाया है और वे प्रश्न हर काल में उठाए जा सकते हैं। "अबिनेज़रा" और "स्पाइनोज़ा", दो इबरानी भाषा के विद्वान् और प्रसिद्ध समालोचकों की यह राय है कि इस पुस्तक की बनावट, दृश्य, विचार-शैली, सितारों के यूनानी नाम और अनेक प्रमाण यह स्पष्ट कहते हैं कि किसी दूसरी भाषा से उल्था करके और कुछ अपनी तरफ़ से मिलाकर इसको इसके रचयिता ने वर्त्तमान स्वरूप प्रदान किया।

(२) **गीत की पुस्तक**—इस पुस्तक में अनेक भजन और गीत हैं। किसी भजन का रचयिता दाऊद को, किसी का और किसी को बताया हुवा है; परन्तु ऐसा बताना प्रमाणरहित है; क्योंकि विद्वानों की यह रायहै कि इसका संग्रह तीसरी सदी पूर्व ईस्वी से पूर्व नहीं हुवा। और कोई कोई विद्वान् तो मकाबियों की बग़ावत का गन्ध इसमें देख कर+यह कहते हैं कि यह पुस्तक १६५ पूर्व ईस्वी के पहिले कदापि नहीं संगृहीत की गई।

(३) **दृष्टान्त की पुस्तक**—यह पुस्तक कहावतों की है और इञ्जील बताता है कि इसको सुलैमान दाऊद के पुत्र

+"Its compilation can hardly have been completed before the 3 rd. century B.C,; it is true, as many scholars think, that there are psalms dating from the time of the Macabee struggle (ps xliv, lxxiv, lxxix, lxxx iii, and perhaps others) it can not have been completed till after 165 B. C. "En. Br. vol III p. 858.

ने १००० पूर्व ईस्वी में लिखा, परन्तु पर्व्व २५ के १ आ० में लिखा है " ये भी सुलैमान के दृष्टान्त हैं, जिन्हें यहूदाह के राजा हिज़ाकियाह के लोगों ने नक़ल किया"। इंजील के अनुसार सुलैमान के समय से २५० वर्ष बाद हिज़ाकियाह का समय आता है, तो फिर यह पुस्तक सुलैमान की कैसे बनाई हुई है? क्योंकि उसे अपने भजनों के नक़ल किए जाने की २५० वर्ष पूर्व ही कैसे सूचना मिली! विद्वानों की राय यह है कि सम्भव है कि कुछ थोड़ीसी कहावतें सुलैमान के नाम से रवायतन प्राचीन काल में प्रसिद्ध रही हों, परन्तु प्रचलित पुस्तक की लगभग सभी रवायतें अन्य स्थानों से संगृहीत हुई हैं ; जिससे सुलैमान का सम्बन्ध किञ्चिन्मात्र भी होही नहीं सका। "इस पुस्तक ने अपने प्रचलित स्वरूप को ४ थी सदी पूर्व ईस्वी के पहिले नहीं ग्रहण किया होगा। कुछ विद्वानों की यह राय है कि इस पुस्तक की तिथि बिलकुल यूनानी काल से ही प्रारम्भ होती है (जो ३३२ पूर्व ईस्वी से शुरू होती है)।" +

भ—दानिएल भविष्यद्वक्ता की पुस्तक
(२७ वीं किताब)

इञ्जील इस पुस्तक का ६०७ पूर्व ईस्वी में दानियल से लिखा जाना बताता है। और इज़ाकील पुस्तक के सदृश इसमें स्वप्न आदि की भरमार है। यह पुस्तक कदापि दानियल की बनाई नहीं है

+"The book will not have finally reached its present form before the 4 th century B. C. Some scholars believe that it dates entirely from the greek period (which began 332 B.C.)"En.Br. vol III p.

जैसा कि, विद्वानों की सम्मति में, इसके ध्यानपूर्वक अवलोकन से प्रतीत होजाता है। इस पुस्तक के बनाए जाने का उद्देश केवल यह था कि "धार्मिक यहूदियों को 'आन्टियोकस एपीफेन्स' के आक्रमण के कालमें, जो १६८-१६५ पूर्व ईस्वी में होता रहा, कष्टों के सहन में धैर्य प्रदान करे। +

अ,—अन्त के छोटे छोटे बारह पैगम्बरों की पुस्तकें-
(२८ वीं से ३९ वीं किताब तक)

इन सब पुस्तकों को इञ्जील बताता है कि उन्हीं बारह पैग़म्बरों ने बनाया कि जिनके नाम से ये पुस्तकें प्रसिद्ध हैं और इनकी रचना का समय ७६० पूर्व ईस्वी से चौथी सदी पूर्व ईस्वी तक फैला हुआ है; परन्तु यह कथनमात्र है। और जबकि पुराने इञ्जील की प्रसिद्ध २ पुस्तकों का रचना-समय और रचयिता, इञ्जील के कथन के अत्यन्त प्रतिकूल ठहरते हैं, तो कैसे विश्वास किया जावे कि ये १२ पुस्तकें उन २ पुरुषों ने उसी काल में बनाईं, जिन पुरुषों से और जिस काल में इञ्जील उनको बना हुआ बताता है ? तथा इन पुस्तकों की वास्तविक प्रतिष्ठा ही क्या होसकती है, जब कि विद्वानों की सम्मति में ये किताबें पुरानी इञ्जील की और पुस्तकों की अपेक्षा निचली श्रेणी की हैं! स्थानाभाव से प्रत्येक पुस्तक की आलोचना अनावश्यक समझ कर छोड़ दी जाती है, परन्तु इतना

×"The aim of the book is to strengthen and encourage the pious Jews in their sufferings under the persecutions of Antiochus Epiphanes 168–165 B.C. ....Internal evidence shows clearly that the book can not have been written by Daniel himself; and that it must be a product of the period in which its interest culminates, and the circumstances of which it so accurately reflects" i. e., of 168–165 B. C. " En. Br. vol III, p. 854.

पाठकों को अवश्य ध्यान रखना चाहिये कि इन पुस्तकों के रचना-समय अथवा रचयिता का सन्तोषजनक पता कोई भी ईसाई नहीं दे सक्ता है।

परिणाम—इस अध्याय में संक्षेपतः यह दिखलाने का यत्न किया गया है कि पुरानी इञ्जील की प्रधान पुस्तकों का कुछ पता नहीं कि किस पुरुष ने और किस समय बनाईं ? विद्वानों की राय यदि विस्तार पूर्वक देखनी हो तो जिन जिन पुस्तकों का हवाला दिया गया है उनको पढ़ना चाहिए। यह उनलोगोंकी तहक़ीक़ात और परिश्रम की अन्तिम सम्मतियां हैं, जिन्होंने अपने जीवन का बहुत भाग इञ्जील के स्वाध्याय में लगाया है। इसी विषय में यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि इन विद्वानों की रायें भी, विशेषकर रचना समय के निश्चय करने में उनके अज्ञात पक्षपात और परम्परागत ईसाईधर्म के पक्षपात से नहीं बच सकीं हैं। यही कारण है कि अनेक स्थानों में जब कोई किताब की घटना किसी ऐतिहासिक घटना की ओर संकेत करती है तो प्रायः यही देखने में आता है कि उस पुस्तक का रचनासमय उसी घटना के समय के समीप निश्चित कर दिया गया है। उदाहारणके लिये इज़ोकील, ज़ेरीमिया, एयूब, रूथ, इत्यादि देख सक्ते हैं। आजकल हाथ की लिखी हुई तथा छपी हुई इबरानी भाषा की पुरानी इञ्जील ठीक ठीक मसोरेटिक इञ्जोल की नक़ल है, "जिसका समय साधारणतया छठीं और आठवीं सदी ईस्वी के बीच में निश्चय किया जाता है"। ×
परन्तु इन सदियों के पूर्व 'बहुत कारणों से निस्सन्देह बहुत

× "The form in which the Hebrew texts of the old Testament is presented to us in all mss, and printed editions is that of the Massoretic text, the date of which is usually placed somewhere between the 6 th. and 8 th. centuries of the Christian era".En. Br. vol III p. 855.

मिलावटें इबरानी इञ्जील में की गई' × टाम्स हाब्स अपनी पुस्तक [Leviathan] के अध्याय ३३ में लिखता है कि "इस पुरानी इञ्जील की बहुत सी पुस्तकों के वास्तविक रचयिता कौन थे, यह और किसी दूसरे इतिहास के काफ़ी शहादत से, स्पष्ट नहीं हो सका है और न प्राकृतिक बुद्धि की किसी दलील से स्पष्ट हो सकता है।" +

अब ऐसी दशा में पाठक महाशय स्वयं निष्पक्ष बुद्धि से विचार कर लें कि पुरानी इञ्जील को प्रामाणिक धर्मग्रन्थ अथवा आसमानी किताब समझना अन्धविश्वास और पक्षपात के अतिरिक्त और क्या हो सकता है। अब अधिक और कुछ न लिखकर पाठकों के सन्मुख पुरानी इञ्जील के विषयों का कुछ नमूना उपस्थित करते हैं,—

अध्याय ३—पुरानी इञ्जील की विषय-सूची—

इस अध्याय में संक्षेपतः ऐसे उदाहरण लिखे जावेंगे कि जिनके रहते हुए कोई पुस्तक, ईश्वरीय ज्ञान अथवा आसमानी किताब का होना तो दूर रहे, प्रमाणिक धर्म्मग्रंथ की उपाधि भी नहीं ग्रहण कर सकती। यदि कोई महाशय प्रश्न करें कि क्या पुरानी इञ्जील में कोई अच्छी बात नहीं है? तो इसका उत्तर यह अवश्य होगा कि "हां है"—परन्तु क्या कोई मनुष्य संसार के किसी

× "...... But before that date, owing to various causes, it is beyond dispute that a large number of corruptions were introduced into the Hebrew Text." En. Br. Vol III p. 855.

+ "Who were the original writers of the several books of Holy Scripture has not been made evident by any sufficient testimony of other history, which is the only proof of matter of fact, nor can be by any argument of natural reason" Thomas Hobbes' Leviathan (C. xxx iii).

भी धर्म्मग्रंथ अथवा किसी विषय की पुस्तक का नाम लेसकता है, जिसमें अच्छी बातें न हों ! परन्तु प्रश्न तो यह है कि पुरानी इञ्जील में क्या असत्य और अनुचित बातें भी हैं ? इस प्रश्न का भी उत्तर "हां" मिलता है और इस उत्तर की सिद्ध में कुछ उदाहरण लिखे जाते हैं, परन्तु स्थानाभाव से संकेतमात्र ही प्रस्तुत किया जाता है, जिन्हें विस्तार से पढ़ना हो, वे असल पुस्तक में देख सकते हैं,—

१—पृथिवी पैदा होजाने के पश्चात् परमेश्वर ने सूर्य्य और चन्द्रमा, दिन और रात्रि में प्रकाश प्रदान करने के लिये बनाए। (उत्पत्ति पुस्तक पर्व्व १ आ० १५, १६, १७)—यह विज्ञान के सर्वथा विरुद्ध है।

२—संसार की उत्पत्ति ४००४ पूर्वईस्वी में हुई, यह उत्पत्ति-पुस्तक के पहिले पर्व्व के आदि में हाशिये पर अवतक छपता है। इसके अतिरिक्त हिसाब लगाने से भी इञ्जील यही बताती है। यह भी विज्ञान के विरुद्ध है और इसको २० वीं शताब्दी का कोई बालक भी नहीं मान सकता।

३—संसार को छः दिन में बनाकर सातवें दिन परमेश्वर का विश्राम करना यह बालकों की सी बात है (उत्पत्ति-पुस्तक पर्व्व १ से पर्व्व २ (४) तक) इस छः दिन को संसार भर के श्रद्धालु ईसाईयों ने खींचतान कर बहुत बढ़ाने का यत्न किया है, परन्तु असमर्थ रहे हैं।

४—परमेश्वर का आदम को मिट्टी से और ईव को आदम के पांसुली से बनाना, चाहे पादरी लोग कितनी हीं खींचतान करें, उपहास की सी बात है। (उत्पत्ति-पुस्तक पर्व्व २ आ० ७, २१—२३)

५—"और तब उन्होंने परमेश्वर की आवाज़, जो दिन के ठंढे में बाड़ी में टहलता था, सुनी" उत्पत्ति० पर्व्व ३ (८)—परमेश्वर

के टहलने पर समालोचना अनावश्यक है, बुद्धिमान विचार लेवें—

६—परमेश्वर का मनुष्यों से बातचीत करना उत्पत्ति० पर्व्व २ (१६), ३ (६), ४ (६, ६) ६ (१३); ७ (१), १२ (१, ७) ३५ (१३) इत्यादि) सारी पुरानी इञ्जील ऐसी बातचीत करने से भरी पड़ी है। शोक है कि आजकल परमेश्वर मनुष्यों से बातें नहीं करता।

७—परमेश्वर ने ज्ञान के वृक्ष का फल खा लेने के अपराध में आदम, ईव और सर्प को शाप दिया (उत्पत्ति० पर्व्व ३ आ० १४-१८) भला बुद्धिमान विचारें कि यह कौनसा अपराध है?

८—परमेश्वर ने खाल का कोट आदम और उसकी पत्नी के लिये बनाया (उत्पत्ति० पर्व्व ३ आ० २१).

९—ज्ञानवृक्ष का फल खा लेने से आदम और उसकी पत्नी ज्ञानी होगए और अब परमेश्वर को यह भय हुआ कि जीवनवृक्ष का फल खाकर ये दोनों अमर न होजावें! उन्हें अदन की बारी से निकाल दिया "और अदन की बारी की पूर्व दिशा में फ़रिश्तों का पहरा बैठा दिया और अग्नि की तलवार चारों ओर घूमनेवाली स्थित कर दिया, जिसमें कि जीवनवृक्ष का मार्ग सुरक्षित रहे" (उत्पत्ति० पर्व्व ३ आ० २२-२४).

१०—केन भूमि के फलों में से परमेश्वर के लिये भेंट लाया और हाबील उसका भाई अपने मवेशियों में से पहिलौंठे बच्चे और मोटे लाया। परमेश्वर ने हाबील का और उसकी भेंट का आदर किया, परन्तु केन और उसकी भेंट का आदर न किया (उत्पत्ति० पर्व्व० ४ आ० ४-५).

११—केन ने, परमेश्वर के इस अनुचित निरादर से, हाबील अपने भाई को मारडाला। परमेश्वर ने शाप दिया और फिर केन के कहने पर उसपर एक चिन्ह लगा दिया कि कोई उसे मार न डाले और यह कहा कि जो केन को क़तल करेगा, उससे सातगुना

बदला लिया जावेगा, (उत्पत्ति० पर्व्व ४ आ० ८, ११, १३, १५).

१२—हनूक (Enoch) परमेश्वर के साथ चलता था और वह न मिला, क्योंकि परमेश्वर ने उसे लेलिया (उत्पत्ति० पर्व्व ५ आ० २४) हनूक बिना मरे स्वर्ग उठा लिया गया, यह विश्वास ईसाईयों का है।

१३—"परमेश्वर के पुत्रों ने मनुष्यों की पुत्रियों को देखा कि वे सुन्दरी हैं और उनमें से जिन्हें उन्होंने चाहा उन्हें ब्योहा" (उत्पत्ति० पर्व्व ६ आ० २).

१४—"आदमी को पृथिवी पर उत्पन्न करने से परमेश्वर पछताया और उसे अति शोक हुआ" (उत्त० पर्व्व ६ आ० ६) परन्तु बाढ लाकर सिवा नूह और उसकी नौका में के प्राणियों के, मनुष्यों तथा पशु पक्षी कीट वृक्षादि सभोंको नष्ट कर डाला ! ईसाइयों के परमेश्वर की दयालुता इससे स्पष्ट होजाती है।

१५—परमेश्वर ने नूह को आज्ञा दी कि ३०० हाथ लम्बी, ५० हाथ चौड़ी। और ३० हाथ ऊंची नोका बनाओ, और सारे प्राणाधारियों में से एक २ ज़ोड़ा रखलो कि जिसमें बाढ़ के पश्चात् वंश चल सके [उत्पत्ति पर्व्व ६ आ० १४, १५, १६] कैसी असम्भव बात थी, पाठक स्वयं विचारें और विज्ञान ने यह सिद्ध करदिया है कि इस प्रकार का बाढ़ आज तक पृथिवी पर आया और न आवेगा।

१५-क-बाढ के पश्चात "नूहने परमेश्वर के लिये एक वेदी बनाई और सारे पवित्र पशु और हरएक पवित्र पक्षियों में से लिये और होम की भेंट उस वेदी पर चढ़ाई। और परमेश्वर ने सुगन्ध सूंघा और परमेश्वर ने अपने मनमें कहा कि आदमी के लिये मैं पृथिवी को फिर कभी शाप न दूंगा" (उत्पत्ति० पर्व्व ८ आ० २०-२१) परमेश्वर के मन की बात कैसे मालूम हुई, यह तो दूसरी बात है; परन्तु निर्दोष पशु और पक्षियों के मान्स

जलने की सुगंधि (कदाचित् उस समय सुगंधि होती रही हो) सूंघ कर परमेश्वर को अपनी गलती अनुभव करनी और फिर वैसी गलती कभी न करने की प्रतिज्ञा करनी एक विचित्र दृश्य है!

१६—जब मनुष्यों ने स्वर्ग तक पहुंचा देने वाली बुरजी बनाना प्रारम्भ किया तो परमेश्वर उस नगर और बुर्जी को देखने नीचे उतरा और यह डरकर कि "देखो लोग एक ही हैं और उन सब की एक ही बोली है" और इस कारण वह जो काम हाथ में लेवेंगे, वह पूरा कर डालेंगे, परमेश्वर ने उनकी भाषा गड़बड़ा दी, और सारी पृथिवी पर उनको छिन्नभिन्न कर दिया (उत्पत्ति० पर्व्व ११ आ० १-८)

१७—इबराहीम, जो परमेश्वर का बड़ा प्यारा था, मिसरानियों से झूठ बोलता है और अपनी स्त्री को बहिन बताता है, जिसमें कि यदि वे लोग पसन्द करें तो उसकी स्त्री को लेलें, परन्तु उसको न मारडालें (उत्पत्ति पर्व्व १२ आ० १२-१३) और इस धोखा देने पर जब उसकी स्त्री को फरऊन ने लिया तो परमेश्वर ने फरऊन और उसके घराने पर बड़ी बड़ी मरियां डालीं (उत्पत्ति० पर्व्व १२ आ० १२, १३, १५, १७)०

१८—परमेश्वर का वचन इबराहीम को स्वप्न में सुनाई देता है (उत्पत्ति० पर्व्व १५-आ० १)०

१९—परमेश्वर तीन वर्ष की एक कलोर, तीन वर्ष की एक बकरी, तीन वर्ष का एक मेढ़ा, एक पंडुक और एक कबूतर इबराहीम से मंगाता है और इबराहीम इन सब का मध्य से दो दो टुकड़े काटता है, परन्तु पक्षियों के टूक नहीं किए—इस पर परमेश्वर नाखुश हुआ और शाप दिया (उत्पत्ति० पर्व्व १५ आ० ९, १०, १३)

२०—इबराहीम अपनी स्त्री के कहने से उसकी लौंडी के पास जाता है और वह गर्भवती होती है (उत्पत्ति० पर्व्व १६ आ० ४)

२१—परमेश्वर प्रगट हुआ इबराहीम को जिसने औंधे

पड़कर स्वागत किया और परमेश्वर ने उससे बातें करके कहा (उत्पत्ति० पर्व्व १७ आ० १, २)—खतना करने की आज्ञा इबराहीम और उसकी सन्तान को सदा के लिये देता है (उत्पत्ति० पर्व्व १७ आ० १०) परमेश्वर इबराहीम से बात करना बन्द करके उसके पास से ऊपर चला गया (उत्पत्ति० पर्व्व १७ आ० २२)०

२२—उत्पत्ति० पर्व्व १८ में नहीं पता चलता कि परमेश्वर की कितनी संख्याएं हैं—और ध्यान से पढ़ने से यही कहना पड़ेगा कि इस पर्व्व मे परमेश्वर एकवचन-बहुवचन (Singular-plural) है ।

२३—उत्पत्ति० पर्व्व १६ में वही एकवचन–बहुवचन परमेश्वर सायंकाल को साडोमन नगर में लूत के पास जाकर ठहरते हैं और वहां के निवासियों ने रात्रि को आकर लूत के घर को घेर लिया " और लूत को पुकार के कहा कि जो पुरुष तेरे यहां आज रात आये हैं सो कहां हैं हमारे पास उन्हें बाहर ला कि जिसमें हम उन से संगम करें । और लूत द्वार से उनके पास बाहर गया और अपने पीछे किवाड़ बन्द किया और कहा कि हे भाईयो ऐसी दुष्टता मत करो । देखो मेरी दो बेटियां हैं जो किसी पुरुष के पास नहीं गई हैं : मैं प्रार्थी हूं कि मुझे उन दोनों को तुम्हारे पास बाहर लाने दो. और तब जो तुम्हारी दृष्टि में भला लगे सो उनसे करो, केवल उन मनुष्यों से कुछ न करो, क्योंकि इसीलिये वे मेरी छत की छाया तले आए हैं " लूत का परिश्रम तो निष्फल हुआ, परन्तु अपनी दो युवती पुत्रियों को ऐसे महापापियों को भेंट करने और उन कुमारियों के सतीत्व धर्म को नष्ट करने पर उद्यत होजाना बड़े अनर्थ का द्वश्य है । परन्तु शोक है ! महान् शोक है इस नगर को छोड़ कर अपनी इन्हीं दो बेटियों को लेकर पहाड़ में जब लूत रहने लगा तो दो रातों में बारी बारी इसने अपनी दोनों पुत्रियों के साथ ....और यह दोनों पुत्रियां इस तरह " अपने पिता लूत से गर्भिणी हुई "—(आ० ३१-३६)

इस अश्लील कथा पर समालोचना करनी व्यर्थ है—पाठक स्वयं विचार लें कि ऐसी पापमय कथाओं के होते हुए भला कैसे कोई बुद्धिमान् और आत्मविवेकी पुरुष पुरानी इञ्जील को धर्म-ग्रन्थ कह सकता है!

२४—इबराहीम का झूठ बोलना और अपनी स्त्री "सारा" को गेरार राजा के पास अपनी बहिन बताकर कर देना और फिर भी परमेश्वर का रात्रि को राजा ही को उलटा डांटना और इबराहीम को अपना पैग़म्बर बताना—(उत्पत्ति० पर्व्व २० आ० २,-३,७)—इस पतिव्रता सारा के कारण परमेश्वर ने उस राजा के परिवार की सारी स्त्रियों के कोखों को बन्द कर दिया था (उत्पत्ति० पर्व्व २० आ० १८)।

२५—परमेश्वर इबराहीम को वंश प्रदान करने के लिये उससे कहता है कि "मैं निश्चित समय पर तुम्हारे पास, जीवन के समय के अनुसार, आऊंगा और सारा को बेटा होगा" (उत्पत्ति० पर्व्व १८ आ० १४) अब इसी पुस्तक के पर्व्व २१ आ० १—२ में लिखा हुआ है "और अपने कहने के समान परमेश्वर ने सारा से भेंट किया और अपने वचन के अनुसार परमेश्वर ने सारा के विषय में किया और सारा गर्भिणी हुई और इबराहीम के लिये उसके बुढ़ापे में उसी समय में जो परमेश्वर ने उसे कहा था एक बेटा जनी।" उपर्युक्त प्रमाणों से क्या तात्पर्य्य निकला, इसको पाठक स्वयं विचार लेवें।

२६—परमेश्वर साधारण मनुष्यों के सदृश इसहाक के पास आता जाता और वार्तालाप करता था (उत्पत्तिपर्व्व० २६ आ०२४-२८)

२७—"तब परमेश्वर ने उस बालक का शब्द सुना और ईश्वर के दूतने स्वर्ग में से हाजिरा को पुकारा" (उत्पत्ति० पर्व्व २१ आ० १७)—अब दूत नहीं पुकारते, कदाचित् परमेश्वर को दुखियाओं का रुदन आजकल न सुनाई देता होगा।

२८—परमेश्वर ने इबराहीम की परीक्षा ली और भेड़ों की जान गई और परमेश्वर के दूत ने स्वर्ग में ही से इबराहीम के साथ बात करनी प्रारम्भ की—[उत्पत्ति० पर्व्व २२ आ० १, १३, १५]

२९—इबराहीम, जो अति वृद्ध होगया और जिसके लिये सारा ने (जिसको स्त्रियों के तरह होना भी बन्द हो चुका था) परमेश्वर की दया और सहायता से एक पुत्र जनी थी [उत्पत्ति० पर्व्व १७ आ० १७ व पर्व्व २४ आ० १] पुनः सारा की मृत्यु के पश्चात विवाह करता है [उत्पत्ति० पर्व्व २५ आ० १]—और इबराहीम परमेश्वर का पैग़म्बर था।

३०—इसहाक की स्त्री गर्भिणी हुई "और उसके पेट में बालक आपस में छेड़ाछेड़ी करने लगे...और वह परमेश्वर से बूझने गई" और जन्म समय दूसरा बच्चा जो याकूब था, पहिले बच्चे का जो एसा था, एड़ी पकड़े हुए था—[उत्पत्ति० पर्व्व २५ आ० २२, २६]—ऐसी छेड़छाड़ आजकल सुनने में नहीं आती और यह परमेश्वर की सृष्टिक्रम से विरुद्ध भी है, परन्तु आसमानी किताब की बात आसमानी नियमानुकूल होनी चाहिए!

३१—याकूब ने, अपनी माता की सम्मति से, अपने सहोदर भ्राता 'एसा' को हानि पहुंचाने के लिये अपने बूढ़े पिता इसहाक को, जो अन्धा था, प्रबल धोखा दिया [उत्पत्ति० पर्व्व २७ आ० ४–७, ११–३५]-परन्तु याकूब भी पैग़म्बर थे और परमेश्वर का साक्षात् दर्शन इनको भी होता था।

३२—याकूब सोया और स्वर्गतक सीढ़ी पृथिवी से लगी हुई स्वप्न में देखी, जिससे फ़रिश्ते चढ़ते उतरते थे और सबसे ऊपर सिरे पर परमेश्वर ने खड़े होकर याकूब से अपनी परमेश्वरता का ऐलान किया [उत्पत्ति० २८ आ० १२, १३] इतनी ही विचित्र याकूब के विवाह की भी कथा है [उत्पत्ति० २९ आ० २३–३०]—ईश्वर ने बारी बारी करके याकूब की दोनों स्त्रियों की कोख

[Womb] खोली (उत्पत्तिपर्व्व० २६ आ० ३१, पर्व्व ३० आ० २२)

३३—याक़ूब का अपने श्वसुर लाबन के मवेशियों को गण्डे वाली छड़ियों के द्वारा गर्भिणी करना और चितकबरे बच्चे पैदा करना। [उत्पत्तिपर्व्व० ३० आ० ३७–३६]

३४—याक़ूब एक फ़रिश्ते से पानेल स्थान पर रात भर कुश्ती लड़ा (उत्पत्तिपर्व्व० ३२ आ० २४)

३५—याक़ूब की पुत्री दीना का सिकिम से, जो हामूर का बेटा था, ख़राब किया जाना और प्रेम किया जाना। याक़ूब और उसके पुत्रों का प्रथम बहुत क्रोधित होना और अन्त को सिकिम का विवाह दीना से होजाने पर इस बात से राज़ी हो जाना कि हामूर वंश का प्रत्येक मर्द ख़तना करा लेवे। हामूर का इसको स्वीकार करके सबका ख़तना करा देना, परन्तु याक़ूब और उसके पुत्रों का धोखा देकर हामूर, सिकिम और सब पुरुषों को क़तल कर देना। (उत्पत्तिपर्व्व० ३४) । इसपर पाठक स्वयं समालोचना करलें।

३६—यात्रा की पुस्तक में मूसा और परमेश्वर की करामातें अनगिनित हैं, जिनके पढ़ने से आश्चर्य होता है कि क्या सचमुच इस विश्व का कर्त्ता धर्त्ता तथा पालन पोषण करने वाला ऐसा ही परमेश्वर है, जैसा कि इस पुस्तक में लिखा है! निम्न उदाहरण विचारार्थ प्रस्तुत किया जाता है,—परमेश्वर झाड़ी में जलती हुई अग्नि के भेष में मूसा के आगे प्रगट हुआ और मूसा से बातें करनी शुरू कीं (पर्व्व ३ आ० २—पर्व्व १४)

इसराईल जाति को, मिश्रदेश की गुलामी से वहां के राजा फरऊन से स्पष्ट कहकर मुक्त कराके उसको अपने असली देश [कनआन इत्यादि की भूमि में] पहुंचाने के निमित्त मूसा को परमेश्वर तैयार करता है-और मूसा से बहुत शास्त्रार्थ के बाद (पर्व्व ३ आ० ५–पर्व्व ४ आ० १७] उसको राज़ी किया। तत्पश्चात् मिश्रदेश-वासियों से और परमेश्वर से युद्ध प्रारम्भ होता है!

क—युद्ध का लक्ष,—
1. १–इसराईल जाति को मिश्र देश से निकाल लाना । पर्व्व ७ [४]
2. २–मिश्र जाति को जताना कि मैं परमेश्वर हूं । पर्व्व ७ [५]

ख—लक्षसिद्धि के साधन
1. १–मूसा को परमेश्वर ने एक छड़ी, जो सांप बन जायाकरे तथा अपना हाथ इच्छानुसार हिम के समान कोढ़ी करदेने और पानी को रुधिर बनादेने की शक्ति प्रदान किया (पर्व्व ४ आ० ३–६)
2. २–मूसा को एक व्याख्याता की आवश्यकता थी, इस कारण हारून को, जो उसका भाई था; उसे मदद के लिये परमेश्वर ने दिया (पर्व्व ४ आ० १४)
3. ३–परमेश्वर मूसा से प्रतिज्ञा करता है कि "मैं तेरे और उसके (हारूनके) मुंह के संग हूंगा और जो कुछ तुम्हें करना है, सो तुम्हें सिखाऊँगा" (पर्व्व ४ आ० १५)
4. ४–परमेश्वर मूसा से प्रतिज्ञा करता है, कि जब मूसा मिश्र के राजा फरऊन से अपनी जाति को मिश्रदेश से निकाल लेजाने को कहेगा, तो मैं "उस के मन को कठोर करूंगा कि वह उन लोगों को जाने न देगा" (पर्व्व ४ आ० २१)

ग—फरऊन के साथ युद्ध

पहिलीवारः—	मूसा का फरऊन से इसराईल जाति के स्वतन्त्रता के हेतु प्रार्थना करना परन्तु उसका स्वीकार न होना
दूसरीवारः—	छड़ी को सांप तथा नदी आदि के जल को रुधिर बना देना
तीसरीवारः—	मेंढकों के दल की चढ़ाई होना
चौथीवारः—	मच्छडों के दल की चढ़ाई होना
पांचवींवारः—	मक्खियों के दल की चढ़ाई होना
छठींवारः—	महामारी से मवेशियों को मार डालना और मनुष्यों पर फोड़े की वर्षा करना
सातवींवारः—	आग और पत्थर की बारिश करना
आठवींवारः—	टिड्डियों के दल का आक्रमण करना
नवींवारः—	देश पर अन्धकार का छाजाना
दशवींवारः—	मिश्रभर की पहिली सन्तान का प्लेग से रात * भर में मारा जाना । मिश्र देश निवासियों का इसराईलों से लूटा जाना

इन दस विपत्तियों पर फरऊन राजा मानजाता था परन्तु परमेश्वर उसके मन और बुद्धि को कठोर कर दिया करता था। दसवीं बार के बाद परमेश्वर को थोड़ी देर के लिये दया आई और उसका मन कठोर नहीं हुआ।

* इसराईलों ने रात को अपने अपने द्वारों पर बकरी के बच्चों को मार कर उनका रुधिर लगा लिया था और रात्रि को परमेश्वर सारे मिश्र में महामारी लिये घूमा तो जिन मकानों में चिन्ह नहीं था, उनमें तो प्लेग छोड़ दिया, परन्तु जिन मकानों पर रुधिर का चिन्ह था, उनके लिये कुछ नहीं किया, यही पर्व्व "Passover" का है जो अब तक ईसाई मनाते हैं (यात्रा० पर्व्व १२ आ० १२, २२, २३, ४३)

इसके पश्चात इसराईल लोग मिश्र से चले, परन्तु परमेश्वर को ऐसा प्रतीत होता है कि मन कठोर करने वाली अपनी प्रतिज्ञा याद आगई कि उसने फिर फरऊन के मन को कठोर कर दिया (पर्व्व १४ आ० ४, १) जिसने इसराईलों का पीछा किया और अन्त को परमेश्वर ने दो एक करामात और दिखा कर ऐसा उन सभों को फंसाया कि वे सबके सब समुद्रमें डूबकर मर गए "यहांतक कि उनमें एक नाम को भी नहीं बचा" (पर्व्व १४ आ० २८)— इस पवित्र वृत्तान्त पर कुछ भी समालोचना की आवश्यकता नहीं है। पाठक स्वयं विचारें कि ऐसी कथाओं पर विश्वास करने व ऐसे परमेश्वर या मूसा ऐसे पथप्रदर्शक से आध्यात्मिक उन्नति की आशा हो सकती है?

३७—जब मिदान वालों को लूटने के लिये परमेश्वर ने आज्ञा दी तो मूसा ने हृदय खोल कर उनको अपने आदमियों से लुटवाया और इसराईल लोग जब मिदान की तमाम स्त्रियों को उनके बच्चे सहित पकड़ लाये, तब मूसा ने (जिस से परमेश्वर आमने सामने वार्ता किया करता था जैसे कि कोई अपने मित्र से वार्ता करता है यात्रा० पर्व्व ३३ आ० ११) उनसे रुष्ट होकर पूछा कि क्या तुम लोगों ने सब स्त्रियों को जीता रक्खा और तत्पश्चात् यह आज्ञा दी "सो अब बच्चों में से हरएक बेटे को और हरएक स्त्री को जो पुरुष से संयुक्त हुई हो, प्राण से मारो, परन्तु वे बेटियां जो पुरुष से संयुक्त न हुई हों उन्हें अपने लिये जीता रक्खो" गिनती पर्व्व ३१ आ० १७, १८ —मूसा के प्रकृति और आचार (Character) का अन्दाज़ा पाठक स्वयम करलें समालोचना अनावश्यक है।

३८—उपर्युक्त लूट में परमेश्वर को जो भाग मिला, वह भी उसी पर्व्व के आ० ३७ से ४१ तक में लिखा है।

४१—परमेश्वर ने अपने मुख से मूसा को यह बतलाया कि थलचर, जलचर और नभचर में कौन कौन हलाल हैं और कौन कौन

हराम (लैव० पर्व्व ११)-नियम विरुद्ध विवाह अथवा कामतृप्ति का निषेध जो परमेश्वर ने किया, उससे पता लगता है कि कैसी बुराइयां परमेश्वर की इस 'प्रियजाति' इसराइल में प्रचलित थीं (लैव० पर्व्व १८; पर्व्व १६ आ० २१; पर्व्व २० आ० १०—२१) परमेश्वर आज्ञा देता है कि बैल, बकरी, गाय, भेड़ी इत्यादि की भेंट उसके प्रति जब पूजा करनी हो की जाय (लैव० पर्व्व २२ आ० २६—३०)

४०—कनान जाति को नाश कर देना चाहिये, ऐसी इच्छा मूसा और उसके साथियों की होगई और परमेश्वर भी तुरंत राजी होगया और इसराइलों ने कनान जाति और उसके शहरों को नाश करदिया (गिनती० पर्व्व २१ आ० २—३)

४१—यहूशुआ की पुस्तक भी उसी प्रकार परमेश्वर और यहूशुआ के सैनिक पराक्रम को प्रगट करता है—यहूशुआ के कहने पर सूर्य्य और चन्द्रमा का स्थिर होजाना (पर्व्व १० आ० १२—१३) "अई" नगर को परमेश्वर की युक्ति पर चलकर दख़ल करना और जलादेना (पर्व्व ८) परमेश्वर इसराइलों की ओर से लड़ता है और शत्रु पर पत्थर बरसाता है (पर्व्व १० आ० १२) यहूशुआ ने बड़ी कठोरता से पांच राजाओं को तिरस्कार करके अपने हाथ से क़त्ल करदिया (पर्व्व १० आ० २४—२६) मकेदा, लिबना, लाचिश, एगलन, हेबरन और डेबीर नगरों के राजाओं और निवासियों का बारी बारी परमेश्वर की सहायता से नाश होने के बाद लिखा है "सो यहूशुआ ने पहाड़ों के, और दक्षिण की तराई और नालों के देशवासी तथा उनके समस्त राजाओं को मारा और एक को न छोड़ा परन्तु समस्त वासियों को सर्वथा नाश किया जैसा कि परमेश्वर ने आज्ञा दी थी (पर्व्व १० आ० ४०) ऐसा पवित्र जीवन यहूशुआ का था और यही कारण था कि परमेश्वर उसका कहना कभी नहीं टालता था और सूर्य्य चन्द्र तक को स्थिर

कर देता था ।

४२—न्याई पुस्तक में भी मारपीट लड़ाई लूट आक्रमण इत्यादि का वर्णन है ।

४३—रुथ पुस्तक में रुथ लड़की की कथा है, जो बोआज़ के पास जब वह सो रहा था जाकर पड़रही और यद्यपि बोआज रुथ को पुत्री और बेटी की उपाधि से पुकारा करता था उसने उससे विवाह कर लिया । आसमानी ग्रन्थ में इस पुस्तक को किस शिक्षा के लिये स्थान मिला है इसका पता नहीं लगता ।

४४—राजाओं की दो पुस्तकें भी लड़ाई, क़तल और लूट की कहानियों से भरी पड़ी हैं । एक उदाहरण दिया जाता है । एलीशिया परमेश्वर का पैग़म्बर था उसने एक मनुष्य 'जीहू' को इसराईल जाति का राजा नियत किया । इस जीहू ने अपने स्वामी अहाब के लड़कों में से ७० लड़कों को मरवाडाला और उनके सरों को दो ढेरी में शहर के द्वार पर रखवा दिया और शीघ्र ही स्वयम जाकर अहाब के कुल में और जो बचे थे उनको भी क़त्ल करडाला [२ राजा० पर्व्व १० आ० ८, ११, १४, १७] इसी प्रकार मिनाहम राजा ने टिपशा शहर को विध्वन्स किया और उन स्त्रियों को जिनके पेट में बच्चे थे काट डाला (२ राजा० पर्व्व १५ आ० १६) ये कथायें स्वयम् अपनी समालोचना हैं, पाठक विचारलें ।

४५ काल के समाचार की पुस्तकें भी इसी प्रकार उन्हीं राजाओं के पुरुषार्थक्रम से भरी हैं जो कि राजाओं की पुस्तकों को शोभित कर रही है ।

४६ सुलैमान का गीत सर्वथा अश्लील और व्यभिचार उत्पादक हैं । इस पुस्तक को पाठक स्वयम पढ़लें क्योंकि यहां उदाहरण देना अनुचित मालूम होता है । परन्तु आश्चर्य तो यह है कि इन गीतों के प्रेम (इश्क़) की बातों को अलंकार रूप में

मानकर गिर्जा (Church)को कान्ता और प्रभु मसीह को कान्त बताने के पश्चात अच्छे भावों में दिखलाया जाता है। पहिला निषेध तो इस अलंकार पक्ष का यह है कि इञ्जील के अनुसार इन गीतों को सुलैमान ने १०१४ वर्ष पूर्व मसीह के बनाया था इसलिये मसीह और गिर्जा पर अर्थ को खींचतान कर लगाना अनुचित है। दूसरी बात यह है कि इन गीतों की सब बातों को (जैसे पर्व्व १ आ० ५; पर्व्व ४ आ० ८; पर्व्व ६ आ० ८, १३; पर्व्व ८ आ० ८;) अलंकार पर घटाना सर्वथा असम्भव है तीसरी बात यह है कि सुलैमान के पास "सातसौ राजकुमारी पत्नियां और तीन सौ दासियां (Concubines) थीं (१ राजा० पर्व्व ११ आ० ३)" और इसलिये यह अधिक विश्वासनीय है कि उसने अपने हार्दिक भावों को इन गीतों में प्रगट किया है।

४७—जरीमिया पर्व्व ३४ आ ४-५ में परमेश्वर ने जरीमियाह द्वारा जदीकिया के प्रति यह भविष्यत बानी की थी कि बाबील का राजा जब तुझे पकड़ लेजावेगा "तब ऐ जदीकिया जूडा का राजा! तू तलवार से नहीं मारा जावेगा तू शान्ति से मृत्यु को प्राप्त होगा और जिस रीति से तेरे पितरों के लिये सुगन्धि जलाते थे तेरे लिये भी जलावेंगे (जरीमिया पर्व्व ३४ आ० २-४)" परन्तु शोक है कि इस ईश्वरी प्रतिज्ञा के होते हुये भी बेचारे ज़दीकिया के सारे पुत्र उसके सन्मुख क़तल किये गए और उसकी आंखें निकलवाई गईं और बेड़ियों में जकड़ा हुआ बाबीलोनिया लेजाया गया जहां वह क़ैदख़ाने मे मरगया। पाठक स्वयं विचार लेवें कि क्या शान्ति की मृत्यु यही कही जासक्ती है? परन्तु हो भी सक्ती है, क्योंकि आख़िर तलवार से तो नहीं मारा गया!

४८—"औरऐसा हुआ कि ज्योंहीं वे दोनों (यलीजा और यलीशा) टहलते हुए।बातें करते चले जाते थे तो देखा कि एक आग का रथ और आग के घोड़े आये और उन दोनों को अलग

किया और यलीशा बवंडर (Whirlwind) में होके स्वर्ग पर जाता रहा (२ राजा० पर्व्व २ आ० ११) "—स्थानाभाव से इस पर समालोचना व्यर्थ सी है ।

४९—"और ऐसा हुआ कि जब वे एक मुर्दे को गाड़ते थे...तब उन्होंने उस मुर्दे को यलीशा की समाधि में फेंका और वह मुर्दा यलीशा की हड्डी से छू गया और जी गया और अपने पांव से खड़ा होगया" [२ राजा० पर्व्व १३ आ० २१] और यह यलीशा, परमेश्वर के ऐसे नबी थे, कि एक छोटे बच्चों के झुंड ने इनको चिढ़ा दिया और इन्होंने तुरत शाप दिया परमेश्वर के नाम में, और तब दो भालू बन में से निकले और उनमें से बयालीस बच्चों को मारडाला [२ राजा० पर्व्व २ आ० २४–२५] आश्चर्य है कि ऐसी कथायें क्योंकर लोग सत्य मानलेते हैं, जो मनुष्य की बुद्धि और अनुभव से सर्वथा विपरीत हैं ।

परिणाम—स्थानाभाव से और अनावश्यक समझकर उपर्युक्त उनंचास उदाहरण प्रमाण सहित पाठकों के अवलोकनार्थ तथा बिचारार्थ दिये गये हैं । जिन पुस्तकों में ऐसी ऐसी कथायें भरी हों, जिन में पैग़म्बरों और परमेश्वर से नियुक्त हुवे राजाओं की, पवित्रता और दयाधर्म्म के विपरीत, अनगिनित करतूतें लिखी हों, जिनमें जगत्पिता परमेश्वर के विषय में सर्वथा अनुचित बातें लिखी हों और जिनमें आत्मा, परमात्मा, प्रकृति, लोक, परलोक के विषय में आध्यात्मिक पिपासा तृप्ति के लिये कोई विचारणीय शिक्षा न मिलती हो, तो भला कैसे कोई पक्षपात रहित मनुष्य ऐसी पुस्तकों को साधारण ज्ञान रखता हुआ धर्म्म ग्रन्थ के नाम से पुकार सक्ता है? पुरानी इञ्जील की रचना समय और इसके रचयिता दोनों का कुछ पता नहीं लगता या यदि किन्हीं अङ्गों का कुछ पता लगाया भी जाता है तो वह सर्वथा अनुमान पर निर्भर होता है और इसलिये संशयरहित नहीं होसकता—परन्तु जब हम

इसकी विषयसूची पर ध्यान देते हैं तो यह सर्वथा प्रमाण और अनुकरण के अयोग्य सिद्ध होजाती है। "महारानी विक्टोरिया जब सिंहासन पर बैठीं, तबतक भी साधारणतया ४००४ पूर्व ईस्वी को दुनिया की उत्पत्ति-तिथी सभी लोग बड़ी संजीदगी से मानते थे......आज के दिन, यद्यपि इञ्जील अबतक ४००४ पूर्व ईस्वी साल अपनी हाशिये पर रखती हुई छपती है, तथापि कोई विद्वान् इस तिथि को गम्भीरता-पूर्वक विचार, करने को तयार नहीं होगा" + किन्ही किन्ही अन्शों में पुरानी इञ्जील में ऐतिहासिक सचाई कुछ होसकती है, परन्तु धर्मग्रन्थ के सिंहासन से, जिसपर कि यह पाश्चात्य देशों में बहुत काल से विराजमान है, इसका पैर उखड़ चुका है और चाहे कितनाही पादरी और ईसाई लोग यत्न करें और इसे नित नई टीकाओं और अलंकारो का वस्त्र पहनावें, परन्तु जब विज्ञान का सूर्य इस उषाकाल को व्यतीत करके (Horizon) के ऊपर निकलेगा तो इसका रहा सहा अधिकार भी जाता रहेगा और उस पवित्र सिंहासन पर वास्तविक ईश्वरीय ज्ञान की अलौकिक शक्ति सुशोभित होकर अपना अनुपम शासन प्राणी मात्र के कल्याणार्थ प्रारम्भ करेगी।

अध्याय ३

नई इञ्जील (रचना-समय और रचयिता)

नई इञ्जील में २७ पुस्तकें हैं। इनमें प्रथम चार को सुसमाचार

+ "When Queen Victoria came to the English throne, 4004 B, C. was still accepted, in all sopriety, as the date of the creation of the world......Today, though Bibles are still printed with the year 4004 B. C., in the margin of the first chapter of Genesis, no scholar would pretend to regard this reference seriously." En. Br. Vol VI. p. 807.

की पुस्तकें कहते हैं और ये शेष २३ की अपेक्षा अधिक प्रमाण की दृष्टि से देखी जाती हैं। ईसाई-धर्म्म और इसके संचारक की जीवनी इन्हीं पुस्तकों से निश्चय की जाती हैं। ईसाईधर्म्म की सचाई और इसका दावा इन्हीं पुस्तकों के आधार पर है और यदि नई इञ्जील के क्षेत्र में ही ईसाई-धर्म्म का पैर उखड़ा तो फिर इसका सारा आडम्बर ताश के मकान की तरह पस्त होजावेगा।

बहुत लोग अक्सर यह कह दिया करते हैं कि मसीह का जन्म ही नहीं हुआ था, परन्तु यह मत किसी गवेषणा के आधार पर निर्भर नहीं है और इस कारण इसकी समालोचना भी यहां करनी निरर्थक है। केवल यह देखना है कि नई इञ्जील के आधार पर ईसाई-धर्म्म के मुख्य सिद्धान्त साबित होते हैं या नहीं, और यदि यह सिद्ध होजावे कि विचारपूर्वक ध्यान देने से इसके सिद्धान्त स्वयं इन्ही इञ्जीलों ही से "गैर-साबितशुद: " (Unproven) का फ़ैसला (verdict) पाते हैं, तो यह कहना अनुचित न होगा कि ईसाई-धर्म्म केवल अन्धविश्वास की भूमि में फल फूल सकता है।

प्रथम की चार पुस्तकें नई इञ्जील की मुख्य पुस्तकें हैं और शेष २३ पुस्तकें इसकी सहायक हैं। अब यह देखना है कि ये पुस्तकें कब बनीं और इस के रचयिता कौन हैं।

इञ्जील तो इनका व्यौरा इस प्रकार देता है:—

क–१४ पत्र [नं० ६ से १९नं० तक]......सेन्टपाल की
ख–५ पत्र तथा पुस्तकें [नं ४, २३–२५, २७] सेन्टजान की
ग– १ पत्र [नं० २०]..........................जेम्स की
१ पत्र [नं०२६]..........................जुडा की
२ पत्र [नं० २१–२२ तक]........पतरस की
घ– २ पुस्तकें [नं० ३,५]....................ल्यूक की
ङ– १ पुस्तक [नं० १]....................माथ्यो की
१ पुस्तक [नं० २]......................मार्क की

बताई कही जाती हैं

क—सेन्टपाल के पत्रों में केवल ४ पत्र (अर्थात नं० ७,८, १३ व १४) जो कि उसने कारनथियन्स और थिसालोनियन्स को भेजे हैं, विद्वन्मण्डली वास्तव में उसके लिखे मानती है। परन्तु पाठक यह भली प्रकार ध्यान रक्खें कि कुछ ऐसे भी विद्वान् (Scholars) हैं, जो इनको भी असली नहीं मानते । चूंकि बहु-सम्मति ने इन चार पत्रों को असली मान लिया है, तथापि यहां भी असली मान ली जाती हैं। × " शेष पत्रों के विषय में यह संतोषजनक रीति से सिद्ध नहीं होता कि वे वास्तव में सेन्ट पाल द्वारा लिखे गए और इस कारण इन अस्वीकृत पत्रों को सेन्ट पाल के किसी शिष्य के नाम लगाना चाहिये, जिसने कि अपने गुरु के विचारों और सिद्धान्तों को और आगे बढ़ाया, अथवा उनको भिन्न प्रकार के प्रश्नों और दशाओं के अनुकूल प्रयोग किया है, " इन चारों पत्रों का ५५ ई० से ६० ई० के बीच में सेन्टपाल से, जोकि एक ऐतिहासिक पुरुष था, लिखा जाना कहा जाता है।

ख—सेन्ट जान की ५ पुस्तकें। इन पांच में १ प्रकाशित वाक्य (Revealation) की पुस्तक है, ३ पत्र हैं और १ सुसमाचार की पुस्तक हैं। इन पुस्तकों के विषय में हज़ारों किताबें लिखी गई हैं, जिनमें ईसाईयों ने यह सिद्ध करने की कोशिश की है कि यह ' जान ' वही ' जान ' है, जो ज़बेदी (Zebedee) का पुत्र और मसीह का प्यारा शिष्य था; परन्तु कई ऐसे कारण हैं, जिनसे कि

× " Among other letters (i. e, those sent to Colosians, Ephosians, Pastorals and Philemon or to Hebrews) it is not satisfactorily proved that they were actually written by St Paul, and as such the puestioned epistles must be set down " to some desciple of St Paul, who has carried the ideas and principles of his master a step farther or has applied them to a different set of problems and conditions. " En. Br. Vol iii p. 874.

यह कथन साधारणतया कोई विद्वान् नहीं मानता और न माना जासकता है। सुसमाचारों के विषय में लिखते समय इन कारणों को विस्तृत लिखा जावेगा। यहां हम सम्प्रति प्रकाशित वाक्य की पुस्तक तथा पत्रों पर विचार करते हैं। प्रकाशित वाक्य की पुस्तक विद्वन्मण्डली मसीह के शिष्य और ज़बेदी के पुत्र "जान" की बनाई नहीं मानती, क्योंकि "ये पुस्तक स्वयम् इस पक्ष का विरोध करती है" × इसमें कहीं कोई ऐसा शब्द नहीं आता, जिससे यह सिद्ध होसके कि लेखक ने मसीह को देखा था और सारी पुस्तक एक स्वप्न के दृश्य का मानो वर्णन है। इसी प्रकार पत्रों के विषय में भी विद्वानों की यही राय है कि "जान के पत्र, जो बाइबिल में हैं, वास्तविक शब्दों में पत्र नहीं कहे जासकते.........और न वे 'जान' के लिखे हुए हैं, यदि जान से तात्पर्य ज़बेदी के पुत्र से है" + जान तो अनगिनित हुए हैं। बहुत से पादरी, बहुत से गिर्जा के प्रबन्धक (Presbyters) और अधिकारी, अनेक राजा, इत्यादि। परन्तु ईसाई धर्म की पुस्तकें, जो जान की बनाई कही जाती हैं, वे तो केवल तभी स्वीकृत हो सकती और सबूत में पेश की जासकती हैं, जब कि यह संशयरहित निश्चय होजावे कि इनका लेखक वही जान है, जो ज़बेदी का पुत्र था। इस तरह तीनों पत्र और प्रकाशित वाक्य की पुस्तकें ईसाईधर्म के सिद्धान्तों की पुष्टि में प्रयोग नहीं की जासकतीं। सुसमाचार की पुस्तक, जो जान की बनाई कही जाती

× "The evidence of the book is against the assumption that the author of this book was the son of Zebedee, the Apostle.'" En. Br. vol xx iii p. 221.

+ "The so-called epistles of John, in the Bible, are not epistles in the strict sense of the term.........Nor are they John's, if John means the son of Zebedee." En. Br. vol xv. p. 450.

है, उसके विषय में पीछे लिखा जावेगा।

ग—जेम्स के पत्र का सबसे प्रथम ज़िक्र आरीगिन (२३०ई०) करता है और इस पत्र को इन शब्दों से, "जो जेम्स का भेजा कहा जाता है," कहता है। ईसूबियस भी (३२५ ई०) इस पत्र का बनावटी कहा जाना स्वीकार करता है और यह कहता है कि प्राचीनों में से बहुतों ने इसका जिकिर नहीं किया है। जिरोम (३६०ई०) भी यह लिखता है कि बहुत लोग इस पत्र के विषय में यह कहते हैं कि इस पत्र को किसीने लिख कर 'जेम्स' के नाम मढ़दिया है। विस्तार के लिये देखिये Ency. Br. vol xv; p 145.

जूड की चीठी भी "ईसूबियस ने अस्वीकृत पुस्तकों में गिनी है, यह कहते हुए कि, जेम्स के पत्र के सदृश प्राचीनों में से बहुतों ने इसका जिकिर नहीं किया है।" +

पतरस की चीठियां भी इसी प्रकार अप्रमाणिक हैं।

घ—प्रेरितों की क्रियाओं की पुस्तक—इसके रचयिता सेन्ट ल्यूक कहे जाते हैं और यदि यह ठीक है तो यह पुस्तक १०० ई० के पश्चात् अथवा एक दो वर्ष पूर्व लिखी गई होगी। ल्यूक ने इस पुस्तक में मसीह के शिष्यों (apostles) की क्रियाओं का वर्णन किया है और यदि मान भी लिया जावे कि इसका रचयिता ल्यूक है तो इससे भी यह पुस्तक मसीही धर्म्म की पुष्टि के सबूत में पेश नहीं की जासकती, क्योंकि न तो ल्यूक ने मसीह को देखा था और न इस पुस्तक की कोई आवश्यकता है, जब कि उसीके कथनानुसार सुसमाचार की पुस्तक उसने पहिले लिखी और "उनसब बातों के विषय में रची, जो यीशु उस दिन लों करने और सिखाने

+Eusebius classed it among the disputed books declaring that as with James "not many of the ancients have mentioned it" (H. E. ii. 23, 25). En. Br. Vol xv. p. 538.

का आरंभ किये हुए था, जिस दिन वह पवित्र आत्मा के द्वारा जिन प्रेरितों को उसने चुना था, उन्हें आज्ञा देकर उठा लिया गया और जिसमें मरणपर्य्यन्त शरीर-सहित दर्शन देने का वृतान्त भी लिखा है" (प्रेरित० पर्व्व १ आ० १–४) ल्यूक के सुसमाचार की पुस्तक की आलोचना इसके पश्चात् की जाती है।

ङ—माथ्यों, मार्क (तथा ल्यूक और जान) की सुसमाचार की पुस्तकें । सुसमाचार (gospel)की पुस्तकें संख्या में ४ हैं, जिनमें पहिली का कर्ता माथ्यों, दूसरी का मार्क, तीसरी का ल्यूक और चौथी का जान कहा जाता है। इन चार पुरुषों में माथ्यों और जान मसीह के बारह शिष्यों में से थे और यदि वास्तव में दोनों सुसमाचार की पुस्तकें (जो इनके नाम विख्यात हैं) इन्हीं की बनाई हैं तो इससे अधिक श्रेष्ठ और माननीय और विश्वास-प्रदायक और कोई सबूत मसीही धर्म्म की पुष्टि में पेश नहीं किया जासकता। इसके बाद मार्क और ल्यूक की बारी आवेगी, क्योंकि इन दोनों पुरुषों में से किसीने भी मसीह को नहीं देखा था; दूसरों की कही बातें सुन कर इन लोगों ने लिखा है और इस कारण जो मसीही धर्म्म का अनुयाई न हो, अथवा पक्षपाती न हो; केवल इन पुस्तकों के आधार पर मसीही धर्म्म को सच्चा नहीं मान सकता है। इन सुसमाचारों की प्रथम तीन पुस्तकें लगभग सर्वांन्श में एक दूसरे से मिलती जुलती हैं। वही वृत्तान्त, वही उपदेश और वही घटनायें लगभग उन्हीं शब्दों में लिखी हुई हैं। इससे बहुत से विद्वानों का यह पक्ष है कि ये तीनों पुस्तकें किसी एक ही पुरानी पुस्तक के आधार पर लिखी गई हैं और उस पुरानी पुस्तक का पता अब नहीं मिलता। कुछ विद्वान् यह भी कहते हैं कि इन तीनों पुस्तकों में से जो सबसे पुरानी है, उसीके आधार पर प्रचलित रवायतों से सहायता लेते हुए बाकी दो पुस्तकें बनाई गईं। प्राचीनों के निकट जाने से सब भेद खुल जाते हैं।

चौथी शताब्दी ईस्वी से पीछे पाठक महाशय चलें और देखे कि इन चारों सुसमाचारों का कहां और किस भेष में पता लगता है:-

३६० ईस्वी...सेन्टजिरोम्......यह चारों सुसमाचारों का ज़िक्र करता है।

३४० ईस्वी...ईसूबियस ......यह चारों सुसमाचारों का ज़िक्र करता है।

२५४ ईस्वी...आरीगेन.........यह भी इन्हीं चारों को मानता है, जैसा कि उसके वाक्य से प्रतीत होता है, जिसको ईसूबियस ने अपनी पुस्तक (H. E. vI. 23) में उद्धृत किया है।

१६० ईस्वी...मुराटोरी.........यह भी इन पुस्तकों की जिक्र करता हुआ पाया जाता है (प्रथम दो सुसमाचारों का नाम इसमें फट गया है, परन्तु ल्यूक और जान के सुसमाचारों को तीसरा और चौथा लिखा है। इससे यह अनुमान किया जाता है कि पहिले और दूसरे का जिक्र फटे हुए स्थान में रहा होगा)।

१८६ ईस्वी...इरानियस...... ईसूबियस की उपर्युक्त पुस्तक में इरानियस का वाक्य उद्धृत है जिससे पता लगता है कि इसको भी ये चारों पुस्तकें मालूम थीं।

१४५ ईस्वी...पेपियस........ ईसूबियस की उपर्युक्त पुस्तक में इसके वाक्य उद्धृत हैं, जिससे

यह पता लगजाता है कि पेपि-
यस केवल माथ्यो और मार्क के
सुसमाचारों को जानता था,
परन्तु ल्यूक और जान के सुस-
माचारों की इसको ख़बर नहीं ।

परन्तु "इसके और पीछे हम जास्टिन मार्टिर, पालकृप, इग्ने-
टियस अथवा क्लीमेन्ट के लेखों में इन चारों सुसमाचारों अथवा
स्पष्ट रीति पर किसी एक भी सुसमाचार का जिक्र नहीं पाते" ×
इससे यह सिद्ध होगया कि सबसे पुरानी शहादत पेपियस की
है और वह भी केवल पहिले और दूसरे सुसमाचारों के विषय में,
तीसरे और चौथे सुसमाचार का (जो ल्यूक और जान की बनाई
कही जाती हैं) पता तक नहीं था । पेपियस एशिया माइनर
का एक प्रसिद्ध बिशप था और जान (ज़बेदी के पुत्र व मसीह के
शिष्य) के शिष्य का शिष्य था । भला कैसे यह सम्भव होसकता
है कि मसीह के 'प्यारे शिष्य" ने सुसमाचार बनाया हो और
पेपियस को ख़बर तक न रही हो ! १८६ ई० में पहिलीबार ल्यूक
और जान के सुसमाचारों का इरानियस ज़िकिर करता है, परन्तु
१४५ ई० के क़रीब पेपियस को ऐसे सुसमाचारों का पता तक
नही है ! अतः यह सिद्ध होगया कि वे दोनों सुसमाचार १४५
ई० और १८६ ई० के बीच में बने । अब मसीह के शिष्य जान का
बनाया चौथा सुसमाचार कैसे होसकता है, जब कि दूसरी शताब्दी

× " But we look in Jain in Justin Martyr, or Polycrap, or Ignatius or Clement of Rome, either for an express recognition of the four canonical Gospels such as we have given from churchmen who lived later, or for a distinct mention of any one them. " Mathew Arnold's God and the Bible (R. p. A. Ed) p. 79.

के उत्तरार्ध में इस सुसमाचार का बनाया जाना सिद्ध होता है। इसी प्रकार ल्यूक का सुसमाचार भी दूसरी शताब्दी के उत्तरार्ध ही में बना ल्यूक ने मसीह को देखा नहीं था और वह सेन्टपाल का साथी था, सेन्टपाल ने भी मसीह को देखा नहीं था, अतः ल्यूक का लिखा हुआ यदि उसने लिखा भी हो, परन्तु किसी प्रमाण से मसीही धर्म्म के सिद्धान्तों के सच्चे साबित होने में सहायता नहीं देसकता; क्योंकि ल्यूक ने मसीह और मसीही धर्म्म के विषय में जो कुछ सेन्टपाल से सुना होगा वही लिखा होगा; परन्तु सेन्टपाल भी दूसरों ही से सुना हुआ, सुना सका होगा। इस कारण ल्यूक ने यदि लिखा भी हो, तो उसका सुसमाचार सबूत में कदापि स्वीकृत नहीं होसकता। एक बात यह भी विचारणीय है कि ल्यूक के नाम का सुसमाचार प्रथम और द्वितीय सुसमाचारों से इतना मिलता जुलता है कि अवश्य यह उन्हीं के आधार पर संग्रह किया गया है। यही राय विद्वानों की है और यही आशय इसके प्रारम्भिक वाक्यों से भी स्पष्ट निकलता है और फिर भी यह विचार करना आवश्यक है कि ल्यूक इतनी अवस्था तक जीवित नहीं रहसकता था कि दूसरी शताब्दी के उत्तरार्ध में अपना सुसमाचार लिखा हो। तीसरा सुसमाचार ल्यूक का और चौथा सुसमाचार जान का (जो मसीह का शिष्य और ज़बेदी का पुत्र था) बनाया नहीं है यह उपर्युक्त प्रमाण से संशय रहित सिद्ध होगया। ल्यूक और मसीह के बीच में सेन्टपाल और वे लोग जिन्होंने मसीह को देखा होगा आते हैं परन्तु ज़बेदी के पुत्र जान और मसीह के बीच में कोई नहीं आता अतः दो एक प्रमाण और देना उचित है जिससे यह और भी निश्चय होजावे कि चौथे सुसमाचार का रचयिता ज़बेदी का पुत्र जान नहीं होसकता।

[७] न०

१—पेपियस, जो एशिया माइनर में हाईरोपोलीस स्थान का विशप था, उसको ऐसे सुसमाचार का पता नहीं था जिसका रचयिता जान, ज़ब्देदी का पुत्र, रहा हो ।

२—ईसूबियस ३१४ ई० में स्पष्ट कहता है कि "पेपियस दो 'जान' नामी पुरुषों को जानता था और मसीह का शिष्य तो उसके लिये एक अति समयान्तर का पुरुष था; और वास्तव में प्रारम्भ के मध्यकालीन ऐतिहासिक बराबर यह बताते हैं कि पेपियस ने अपनी "प्रभु उपदेश" नामी पुस्तक के दूसरे भाग में यह लिखा है कि ज़ब्देदी के दोनों पुत्र (जेम्स और जान) 'यहूदियों से क़त्ल किये गए' और इस वजह से जान सन् ७० ई० के पूर्व ही अवश्य मृत्यु को प्राप्त होगया होगा ।"+

३—कारथेज, आर्मेनिया और सीरिया देशों के शहीद-सूचियों (Martyrologies) से भी पेपियस के इस कथन की कि जान यहूदियों से मारा गया पुष्टि होती है ।

४—"असिकन्दरिया के क्लेमैन्ट की शहादत से भी यही सिद्ध होता है क्योंकि (Clem. Alex. strom) अध्याय ४ आ० ९,७१ में हिराकलियन मसीह के उन शिष्यों की सूची देता है जो शहीद नहीं हुए और वे नाम ये हैं । माथ्यो, फ़िलिप, टामस और लेवी" × इससे भी जान का शहीद होना सिद्ध होता है ।

+ "Thus Papias, as Eusebius about 314 insists, knew two Johns and the Apostle to him was a far away figure; indeed early medieval chroniclers recount that papias " in the second book of the Lord's Saying" asserted that both the sons of Zebedee were slain by Jews, so that the Apostle John would have died before 70. " En. Br. vol xv. p. 456.

× " Clement of Alexandria (Bousset, Die offenbam-rings' p.

५—चौथे सुसमाचार के पर्व्व २१ आ० २४ में भी प्रत्यक्ष स्पष्ट होता है कि इसका रचयिता जान (मसीह का शिष्य) नहीं है।

६—चौथे सुसमाचार में भी बहुत से करामात मसीह के ऐसे दर्ज हैं जो पहिले तीन सुसमाचारों में आचुके हैं। अब माथ्यो सुसमाचार के पर्व्व १७ के आ० १–८ तक एक करामात लिखा है और उस अवसर पर मसीह के तीन शिष्य उपस्थित थे और उनमें से एक जान भी था। अब उस करामात का ज़िकिर चौथे सुसमाचार में नहीं है इससे भी यही निश्चय होता है कि चौथे सुसमाचार का रचयिता जान नहीं है।

७—मसीह की स्पष्ट पेशीनगोई (Prophecy) ज़बेदी के दोनों पुत्रों के शहीद होने की प्रथम और द्वितीय सुसमाचारों में मिलती है (मार्क पर्व्व १० आ० ३९ और माथ्यो पर्व्व २० आ० २३)। यदि यह दोनो भाई शहीद न हुए होते तो मसीह पर आक्षेप आजाने के डर से इस पेशीनगोई को सुसमाचारों से निकाल दिया गया होता इससे भी जान की शहादत पुष्ट होती है।

अब उपर्युक्त प्रमाणों से कुछ संशय किसी भी पक्षपातरहित मनुष्य को बाकी नहीं रहसकता कि चौथे सुसमाचार का रचयिता कोई और जान तो हो सकता है, परन्तु ज़बेदी का पुत्र और मसीह का 'प्यारा शिष्य' जान कदापि नहीं है।

अब केवल पहिला और दूसरा सुसमाचार बचा और इनके निसबत यह देखना है कि यह कितना प्रमाण रखते हैं। इन

---

38) furnishes evidence in the same direction; for in Clem. Alex. Strom. iv. 9, 17, the Gnostic Heracleon gives a list of the Apostles who had not been martyred and these were: " Mathew, Philip, Thomas and Levi (corrupt for Lebbaeus). " En. Br. vol xxiii. p. 222.

दोनो सुसमाचारों में पहिला माथ्यो का बनाया बताया जाता है जो मसीह के शिष्यों में से एक था और दूसरा मार्क का जो पीटर (मसीह के शिष्यों में एक) के साथ रोम गया था और दुभाषिया का काम करता रहा । इन दोनो सुसमाचारों के विषय में सब से पुरानी शहादत पेपियस की है जो ईसूबियस की पुस्तक में दर्ज है और वह यह है ।

"माथ्यो ने, बहरकैफ़, इबरानी भाषा में (मसीह की) वाणियों को एकत्रित किया और लिख डाला, और प्रत्येक मनुष्य ने अपनी योग्यतानुसार उसका तर्जुमा किया । मार्क, जिसने प्रभु को स्वतः नहीं जाना था और न कभी प्रभू को बोलते सुना था, दुभाषिया की हैसियत से पीटर के अन्तिम जीवन में उसके साथ था; और जब कभी पीटर ने, अपनी शिक्षाओं के अन्तर्गत, मसीह के किसी कार्य्य या कहावत का ज़िक्र किया तो मार्क उसको बजिन्स नोट कर लेने का ख़्याल रखता था, परन्तु बिना किसी तर्तीब के और बिना एक लगातार बयान मसीह के उपदेशों का बनाये हुए, जो बात पीटर के इरादे में न आई । इस तरह मार्क ने कुछ नहीं छोड़ा और कुछ बातों को जैसा पीटर ने बयान किया था लिख लिया, परन्तु और कुछ ध्यान नहीं रक्खा सिवाय इसके कि सुने हुए में से न तो कुछ छोड़े और न कुछ बदले" (Ap. Eus. His. Eccle. III. 39.) अब उपर्युक्त पेपियस के कथन से यह पता चल गया कि माथ्यो ने इबरानी भाषा में केवल प्रभु (मसीह) की वाणियों का संग्रह लिखा था और मार्क ने यूनानी भाषा में जो कुछ पीटर से सुना उसको बिना किसी तर्तीब और कुछ छोड़ने के लिख लिया । प्रचलित माथ्यो रचित सुसमाचार और उपर्युक्त माथ्यो के वाणीसंग्रह (Logia) में आकाश और पृथ्वी का अन्तर है और बहुत से ऐसे कारण हैं जिससे कि प्रचलित माथ्यो रचित सुसमाचार प्रामाणिक नहीं होसकता ।

१—माथ्यो-रचित वाणी-संग्रह, जिसका ज़िक्र पेपियस करता है वह इबरानी भाषा में था परन्तु इबरानी भाषा में कोई ऐसी पुस्तक न तो इस समय उपस्थित है और न तो पेपियस के ही सम्मुख वह पुस्तक उपस्थित थी ।

२—यदि पेपियस १४० ई० में उस माथ्यो-रचित 'वाणीसंग्रह' के तर्जुमों को स्पष्ट शब्दों में ढीला (Loose) और प्रमाणरहित मानता है तो उन तर्जुमों के आधार पर और बहुत मिलावटों के पश्चात् जो प्रचलित सुसमाचार माथ्यो के नाम से है उसको हम पेपियस के काल से पौने दो हज़ार वर्षों के पश्चात् क्यों और कैसे प्रामाणिक मान लेवें ?

३—"माथ्यो ने केवल मसीह की वाणियों का संग्रह भर किया था न कि प्रचलित सुसमाचार जो माथ्यो के नाम का है उसको बनाया हो जिसका वेष और प्रकार "संग्रह" शब्द से बिलकुल प्रतिकूल है ।"+

यह विद्वन्मण्डली की भी सम्मति है कि "प्रचलित माथ्यो और ल्यूक सुसमाचार असल वाणी-संग्रह से (जिसका जिक्र ऊपर हो चुका है) प्रभावित हुये हों परन्तु ये विशेष कर मार्क-रचित सुसमाचार के, अथवा किसी और ऐसी पुस्तक के, जिसकी सबसे शुद्ध प्रतिनिधि प्रचलित, मार्क रचित सुसमाचार है, आधार पर कुछ बढ़ा घटा कर बाद में रचागया ।" + मार्क ही ऐसी पुस्तक

+ "The description, however, of what Matthew did, suits better the making of Christ's discourses and sayings than the composition of a work corresponding in form and character to our Gospel of Matthew" En. Br. vol xvii. p. 896.

× "Of late however this Gospel (i. e. Mark's) has acquired new importance through the critical enquiries which have led to the conclusion that the two other synoptic Gospels are based upon

यद्यो जो इन चारों सुसमाचारों में पुरानी ठहरी, परन्तु पेपियस इसको "विना तरतीब" के लिखा हुआ जानता था जो उपाधि प्रचलित मार्क के सुसमाचार को नहीं दी जा सकती क्योंकि इसकी तरतीब "ऐतिहासिक दृष्टि से और सुसमाचारों की अपेक्षा यदि श्रेष्ठतर नहीं है तो उतनाही श्रेष्ठ है" +

इसके अतिरिक्त "मार्क ने, जो पीटर का शिष्य और दुभाषिया था, पीटर के मृत्यु के पश्चात् मसीह के शब्दों और करामातों को जो पीटर को कहते सुना था उसे लेख बद्ध किया" × यह बात भी पेपियस ही के लेख से जो ईसूबियस ने अपनी पुस्तक में दिया है सिद्ध होता है। इन दोनो बातों को ध्यान रखने से यह अवश्य मालूम पड़ता है कि मार्क ने पीटर के बाद जो कुछ लिखा वह उतना प्रामाणिक नहीं होसकता जितना कि पीटर के जीवन में ही लिखी हुई पुस्तक हो सकती थी। इसी तरह प्रचलित सुसमाचार जो कई सम्पादकों के हाथों से गुज़र कर इस रूप में हम तक पहुंचा

---

it or upon a document which is upon the whole most truly represented in it, so that it possesses the advantage of being an earlier source of information or at least of bringing us more fully into contact with such a source." En. Br. Vol XVii. p. 728.

+ "The description "not in order" does not fit our Gospel of Mark, the order in which it is written is from an historical point of view as good as, if not better than, in the other gospels" En. Br. vol xvii p. 730.

× "According to a fragment of Papias (Ap. Eus. His. Eccle iii 37) taken from a work probably written AD. 140, Mark, who was the follower and interpreter of Peter, recorded after the latter's dicease the words of Christ and the narratives of His deeds which he had heard the Apostle deliver, but he could not arrange the matter in order," because he had not been himself a personal follower of Jesus." En. Br. vol XVII. p; 729

है उतना प्रामाणिक नहीं हो सकता जितना कि मार्क का असली लेख। परन्तु शोक तो यह है कि न तो पीटर ने कोई सुसमाचार लिखा और न पीटर के जीवन में मार्क ने कुछ लिखा और सब से अधिक शोक की बात तो यह है कि मार्क ने पीटर के बाद जो कुछ लिखा वह भी असली रूप में प्राप्त नहीं हो सकता। ऐसी दशा में पाठक स्वयम् विचारें कि प्रचलित मार्क-रचित सुसमाचार, यदि मार्क के असली रचना से बहुत भिन्न भी न हो, स्वतः प्रमाण नहीं होसकता है।

नई इञ्जील की कुल पुस्तकों के रचना-समय और रचयिता के विषय में ऊपर लिखा जा चुका है। अन्वेषण ने सभी पुस्तकों को, सिवाय सेन्टपाल की चार चीट्ठियों के जो कारिनथियन्स और थिसालोनियन्स के नाम उसने लिखी और दूसरे दर्जे में मार्क-रचित सुसमाचार के, अप्रामाणिक सिद्ध करदिया। अब सेन्ट पाल और मार्क दोनों की शहादत केवल सुनी सुनाई शहादत (hearsay Evidence) है जो किसी भी न्यायालय में स्वीकृत नहीं हो सकती। मसीह ने कोई पुस्तक नहीं लिखी और न उनके १२ शिष्यों में से किसी एक की भी कोई चीज़ लिखी हम तक पहुंची है। १४५ ई० में पेपियस, जो हम से अधिक निकट मसीही काल से था और जो खुद ईसाई और विशप था, वह मार्क और माथ्यो-रचित लेखों को उपर्युक्त कारणों से विश्वास का पात्र न समझता हुआ लिखता है।

"यदि मैं किसी से मिला जिसने प्रथम प्रबन्धकों (Presbyters) का कुछ साथ दिया हो तो मैं पूछता था कि उनसे तुमने क्या सुना है, अर्थात् क्या कहा अन्डरिउ (Andrew) पीटर फ़िलिप टामस, जेम्स, जान अथवा माथ्यो ने........क्योंकि मैं यह विचार करता था कि मैं उतना लाभ पुस्तकों से

प्राप्त नहीं कर सकता जितना और प्रचलित मौखिक रवायतों से"+

जब कि पेपियस ही जीवित और प्रचलित मौखिक रवायतों को प्रथम और द्वितीय सुसमाचारों से अधिक लाभदायक समझता है तो पीछे दो हजार वर्ष पेपियस के पश्चात् हम क्यों उनको प्रामाणिक मानें ?

परिणाम यह निकला कि नई इञ्जील भी पुरानी इञ्जील के सदृश विश्वसनीय नहीं है परन्तु यदि मजबूर किया जावे कि नई इञ्जील की समस्त पुस्तकों में से किस पुस्तक पर कुछ विश्वास स्थिर किया जा सका है तो सेन्टपोल की चार चीट्ठियां और मार्करचित सुसमाचार ही पर ध्यान आकर्षित होता है यद्यपि इनकी शहादत भी सुनी सुनाई शहादत के दर्जे से श्रेष्ट नहीं है ।

अध्याय ४-मसीह का आगमन और मसीही धर्म्म के मुख्य सिद्धान्त ।

मसीही धर्म्म और इसके प्रवर्तक मसीह के विषय में जो कुछ ज्ञान प्राप्त होता है वह नई इञ्जील से प्राप्त होता है । मसीह का अद्भुत जन्म, उसके अलौकिक करामात, उसकी पेशीनगोइयां और अन्त को सलीब पर फांसी पड़ना और तीसरे दिन जी उठना और हज़ारों मनुष्यों को दर्शन देना, ये बातें मसीही धर्म्म के उतनी ही आवश्यक अङ्ग हैं जितनी कि मसीह की शिक्षा । इसी के साथ मसीही धर्म्म और इसके प्रवर्तक का

+ "If I found some one who had followed the first presbyters, I asked him what he had learnt form them, what said Andrew, Peter or Philip, Thomas, James, John or Matthew............ for I thought I could not derive as much advantage from books as from the living and adiding traditions" Modern Science and Modern Thought' by Laing.

सम्बन्ध पुरानी इञ्जील के साथ प्रथम अध्याय में बताया जा चुका है।

यहां प्रथम हमें यह देखना है कि क्या मसीह के आगमन की सचमुच पुरानी इञ्जील में पेशीनगोई है ? यहूदी लोग जो केवल पुरानी इञ्जील को अपना धर्म्म ग्रन्थ मानते हैं, अपनी क़ौम के उद्धारक राजा की बाट देख रहे हैं परन्तु मसीह को अपना उद्धारक राजा नहीं मानते । अब हम यहां यह संक्षेप से दिखलाते हैं कि नई इञ्जील में जहां जहां जिस घटना को पुरानी इञ्जील की पेशीनगोई की पूर्ति बतलाई जाती है वह सर्वथा असत्य है ।

१—मसीह की माता का गर्भवती होना और फ़िरिश्ते का आकर जोज़ेफ़ को समझाना कि तुम्हारी स्त्री पवित्र आत्मा से गर्भवती हुई है और जो पुत्र वह जनेगी वह मनुष्यों को पाप से बचावेगा, इतना लिखकर माथ्यो सुसमाचार कहता है:—

"यह सब इसलिये हुआ कि जो वचन परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा था सो पूरा होवे कि देखो कुंवारी गर्भवती होवेगी और वह पुत्र जनेगी और वे उसका नाम इमानुएल रक्खेंगे जिसका अर्थ यह है ईश्वर हमारे संग" माथ्यो० पर्व १ आ० २२–२३ यह वचन, जो मसीह की पेशीनगोई समझी जाती है, इसाया के पर्व्व ७ आ० १४ का है अवसर यह है कि जूदा के राजा 'अहाज़' पर जब इसराईल के राजा 'पेकाह' ने एक और राजा को मिलाकर चढ़ाई की तो अहाज़ को धैर्य्य बंधाने के लिये इसाया भविष्यद्वक्ता (नबी) ने यह पेशीनगोई की, इस पेशीनगोई से और मसीह से कोई सम्बन्ध नहीं क्योंकि उसी पर्व्व के आ० १६ मे लिखा है:—

"क्योंकि उससे पहिले कि वह लड़का बुराई से घृणा करना और भलाई को चुन लेने का ज्ञान जाने वह भूमि जिस के दो राजाओं के कारण से तू भयभीत है उजाड़ होजावेगी । "

अब इस आयत में पेशीनगोई की पूर्ति का समय भी बतला दिया

और परिणाम भी स्पष्ट कर दिया। इस पेशीनगोई का सम्बन्ध केवल अहाज़ से और उसके शत्रुओं के विध्वंस से है और मसीह से "जो करीब एक सहस्र वर्ष पीछे पैदा हुआ" क्या मतलब हो सकता है पाठक स्वयं विचार लेवें।

२—मसीह का जन्म बैथेलहम में हुआ क्योंकि पेशीनगोई थी (देखिये माथ्यों २ आ० ६) अब यह वाक्य मिकाह के पर्व्व ५ आ० २ का है। इसका सम्बन्ध भी मसीह से कुछ नहीं हो सकता क्योंकि मिकाह के उसी पर्व्व के आ० ५ और ६ के पढ़ने से कुछ संशय नहीं रह जाता कि वह पुरुष जिसके आने की सूचना दी गई है वह एक सैनिक योद्धा होगा जो कि "इस प्रकार हम लोगों को एसीरियो की अधीनता से छुड़ावेगा"

३—हिराड ने छोटे बालकों को मरवाया और एक फ़रिश्ते की सूचना देने पर जोज़ेफ़ अपनी स्त्री मरियम देवी और बालक मसीह को लेकर मिश्र देश में रहे और, जब हिराड मर गया तब वापस आये " जिससे कि वह वचन पूरा होवे जिसको परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा था:—मिश्र से मैंने अपने पुत्र को बुला लिया है" (माथ्यो पर्व्व २ आ० १५)—

यह वचन " मिश्र से...लिया है " होसिया के पर्व्व ११ आ० १ में आया है जिसके पढ़ने मात्र से ही ज्ञात हो जावेगा कि इस वाक्य का मसीह से कोई सम्बन्ध नहीं है।

४—माथ्यो के पर्व्व २ आ० १७ की पेशीनगोई का वाक्य जेरीमियाह के पर्व्व ३१ आ० १५ का है। निबुक़दनज़र ने ज़ेरीमियाह के समय में, यरुशलम फूंका था और यहूदियों को क़ैद कर बाबिलन लेगया था। जेरीमियाह के उसी पर्व्व के १६ व १७ आयतों को पढ़ने से ज्ञात हो जावेगा कि यह वाक्य कोई पेशीनगोई हिराड की बालक-हत्या के विषय में हो ही नहीं सकती +

+ मसीह के जन्म के समय में रोमन जाति का राज्य था और

५—मिश्र देश से जोज़ेफ़ लौट कर बैथलहम नहीं गये परन्तु नाज़रेथ गये "कि जिसमें कि भविष्यद्वक्ताओं का कहना पूरा होवे कि 'वह नाज़रीन कहलावेगा'" (माथ्यो पर्व्व २ आ० २३)—ऐसा वाक्य सारे पुराने इञ्जील में कहीं नहीं आया है।

माथ्यो की सभी ऐसी पेशीनगोई की पूर्ति के दृष्टान्त अटकल और बिना किसी तात्पर्य के हैं। पाठक महाशय ऐसे स्थानों को प्रथम अध्याय से देखकर पुरानी इञ्जील से मुकाबिला करलें और खुद देखलेंवें कि पेशीनगोई का पक्ष बिलकुल कमज़ोर है और एक क्षण भी नहीं ठहरता।

६—मार्क में बहुत कम पेशीनगोई के मिसाल दिये हुये हैं। दो तीन मिसालें जो हैं वह लिखी जाती हैं:—

क— मार्क पर्व्व १ (२–३)–इसमें जो वाक्य आये हैं उसमें आ० २ तो मलाकी पर्व्व ३ (१) का है और आ० ३ इसाया पर्व्व ४० आ० ३ का है। और यह कहा जाता है कि इसमें जान बपतिस्मा वाले (John the Baptist) के आने की सूचना दी गई है। परन्तु मलाकी के पर्व्व ४ आ० १ और ५ को मिला कर पढ़ने से पता लग जाता है कि यलीजाह के आने की ख़बर दीगई है जो कि "परमेश्वर के बड़े और भयंकर दिवस के पूर्व" आवेगा। अब जान बपतिसमा वाले को यलीजाह और प्रभु मसीह के आगमन को वह भयंकर दिवस क्यों और किस तर्क से मान लिया गया है समझ में नहीं आता। इस तरह से मानना हो तो हम किसी भी सुधारक के आगमन दिवस को भयंकर दिवस और उसके पहिले किसी छोटे सुधारक को जान बपतिसमा वाला मान सकते हैं।

हिराड रोमन गवर्न्मेन्ट की ओर से केवल एक गवर्नर था। भला ऐसा अत्याचार वह क्यों करता और कैसे कर सकता था जब कि वह किसी समय भी वहां से हटाया जा सकता था? इस हत्या का ज़िक्र उस समय के इतिहासवेत्ताओं ने कहीं नहीं किया है।

मार्क १ (३) का ज़िक्र जो इसाया पर्व्व ४० (३) में है उसका अर्थ उसी पर्व्व के आ० ६ के देखने से ही स्पष्ट होजाता है कि बपतिसमा वाले से कुछ सम्बन्ध नहीं है ।

मार्क के पर्व्व ११ तथा पर्व्व १५ में गदही के बच्चे को मांगना तथा मसीह के फांसी के पश्चात् उसके कपड़े के लिये नाम डालना लिखा है परन्तु माथ्यो के सदृश इनको मार्क ने पेशीनगोई का निशाना नहीं बनाया ।

ख—मार्क पर्व्व १५ आ० २८ में मसीह का दो चोरों के साथ फांसी दिये जाने की घटना ब्यान करके यह लिखा है "तब धर्म्म पुस्तक का यह वचन पूरा हुवा कि वह कुकर्मियों के संग गिना गया"—यह वाक्य इसाया पर्व्व ५३ आ० १२ में आया है । परन्तु मसीह के साथ इस वाक्य का विशेष क्या सम्बन्ध है? समझ में नहीं आता । संसार में हज़ारों लाखों मनुष्यों को राजाओं तथा पोप और पादरियों ने ज़बरदस्ती मरवा डाला तथा जला डाला है तो क्यों यह वाक्य उन बेगुनाहों के लिये प्रयोग न किया जावे ? ।

उपर्युक्त प्रमाणों से, जिनकी संख्या स्थानाभाव के कारण अब अधिक नहीं बढ़ाई गई है, यह संशयरहित विदित होजाता है कि मसीह के विषय में कोई पेशीनगोई पुरानी इञ्जील में नहीं है । पुरानी इञ्जील और इसके पैग़म्बरों के विषय में पिछले अध्याय में लिखा जाचुका है । अब पाठक स्वयम् विचारें कि असंख्य लोक लोकान्तरों का स्वामी, जिसका महत्त्व और अनुपम विस्तार अकथनीय है, क्या पुरानी इञ्जील के पैग़म्बरों द्वारा, जिनके चरित्र से पाठक महाशय भली प्रकार परिचित होगये हैं, अपने ज्ञान का प्रकाश कर सकता है ? प्रभु मसीह ऐसे धर्म्मात्मा पुरुष को जिस जाति ने फांसी देदी क्या वह परमेश्वर की 'प्यारी जाति' हो सकती है ? चाहे जो हो पेशीनगोई का पक्ष संशयरहित कदापि नहीं हो सकता । इसके अतिरिक्त एक आयत भी पुरानी इञ्जील से ऐसा.

कोई नहीं ला सकता जो मसीह के लिये वास्तव में प्रयोग किया गया हो और जिससे यह संशयरहित सिद्ध हो सके कि मसीह के लिये पुरानी इञ्जील में पेशीनगोई हुई है ।

यद्यपि साधारण बुद्धि और गम्भीरता की दृष्टि से नई इञ्जील की एक किताब भी निर्भ्रान्तरूप से प्रामाणिक नहीं रहजाती और यद्यपि हम मसीही धर्म्म के मुख्य सिद्धान्तों की जांच में अधिक आश्रय सेन्टपाल की चार चिट्ठियों और और प्रथम व द्वितीय सुसमाचारों पर करेंगे परन्तु ल्यूक और जान के सुसमाचारों से भी मुक़ाबिला करते चलेंगे । अब मसीही धर्म्म के मुख्य सिद्धान्त निम्न प्रकार ब्यान किये जा सकते हैः ।

१—मसीह का कुंवारी स्त्री से पैदा होना पवित्र आत्मा के द्वारा

२—मसीह का करामात दिखाना

३—मसीह का अपने को ईश्वर का पुत्र अथवा अवतार और मुक्ति का एकमात्र साधन बताना

४—मसीह का सलीब पर फांसी पाना और तीसरे दिन क़बर से जी उठना और अपने शिष्यों और हज़ारों मनुष्यों को दर्शन देना

मुख्य सिद्धान्तों पर विचारः—

१—अब प्रथम सिद्धान्त के विषय में चारों सुसमाचारो से क्या शहादत मिलती है वह इस नक़शे से विदित होजाता हैः—

मरियम देवी, अपने पति जोज़ेफ़ को बिना जाने, पवित्र आत्मा से गर्भवती होगई । जोज़ेफ़ जब इस शोक से बहुत पीड़ित था और अपनी पत्नी को चुपचाप निकाल देने का संकल्प कर रहा था तब परमेश्वर के फ़रिश्ते ने मरियम देवी का पवित्र आत्मा से गर्भवती होजाना जोज़ेफ़ को स्वप्न में बताया ।	माथ्यो रचित सुसमाचार
इसमें कुंवारी से जन्मने की कोई ज़िक्र नहीं है ।	मार्करचित ,,
इसमें माथ्यो सुसमाचार के अनुसार मसीह का कुंवारी के पेट से पवित्र आत्मा द्वारा पैदा होना लिखा है । परन्तु इसमें फ़रिश्ते ने मरियम देवी को स्वप्न में यह बताया कि तू पवित्र आत्मा से गर्भवती होगई है ।	ल्यूकरचित ,,
इसमें कुंवारी से जन्मने की कोई ज़िक्र नहीं है ।	जानरचित ,,

उपर्युक्त चित्र से यह विदित होता है कि मार्क (जो सबसे पुराना सुसमाचार है) और जानरचित सुसमाचारों में मसीह का कुंवारी से पैदा होना नहीं लिखा है । पहिले सिद्धान्त की पुष्टि में केवल माथ्यो और ल्यूक शहादत देते हैं परन्तु इनकी शहादत में भी परस्पर विरोध हैं । ख्वाब में फ़रिश्ते का कहना तो दोनो बताते हैं परन्तु माथ्यो कहता है कि फ़रिश्ते ने जोज़ेफ़ से स्वप्न में कहा और ल्यूक कहता है कि फरिश्ते ने मरियम देवी से स्वप्न में कहा । अब पाठक स्वयं विचारलें कि इन शहादतों से मसीह का कुंवारी से जन्मना साबित होजाता है या नहीं जब कि परमात्मा की दी हुई बुद्धि और मनुष्यमात्र का तजुरबा ऐसे

सिद्धान्त का विरोध करता है।

२—मसीह के करामात (Miracles) सुसमाचारों के पढ़ने से ज्ञात होता है कि बहुत से अन्धे, लंगड़े, लूले, बहरे, पागल मनुष्यों को मसीह ने अच्छा किया। इसीके साथ यह भी पढ़ते हैं कि प्रेतों को निकाला और मुर्दों को जीवित किया। कई कारण हैं जिनसे कि ऐसे करामात पर विश्वास नहीं करना चाहिये।

क—विज्ञान के अटल सिद्धान्त और इनसानी तज़ुरबे के ऐसे करामात सर्वथा विपरीत हैं। आज कल शिक्षाहीन और मूर्ख जातियों में प्रेत भूतादि के गपोड़े सुनने में आते हैं। करोड़ों मनुष्य मरते हैं परन्तु एक शब्द भी दूसरी दुनियां से सुनने में नहीं आता कि जिससे इस लोक के निवासी परलोकवासियों की कुछ सहायता कर सकें। परन्तु सुसमाचारों में प्रेत का मसीह को मैदान में ले जाना और चालीस दिन तक परीक्षा करना और बात-चीत करना इत्यादि लिखा हुआ है जो सर्वथा असत्य और बुद्धि के विपरीत है।

ख—अन्धे, लूले, लंगड़े आदि का छू देने अथवा कह देने से अच्छा होजाना भी बुद्धि के विपरीत है और मसीह ने ऐसे करामात किये यह केवल अन्धविश्वास से ही माना जा सकता है। आजकल एक मनुष्य भी जो कुछ भी साधारण बुद्धि रखता है वह यह नहीं मान सकता कि चार रोज़ का मुर्दा मसीह ने जिला दिया।

ग—मसीह को स्वयम् उसके शिष्यों में से एक ने जिसका नाम जूडाज़ था पकड़वाया। मसीह को पकड़ने के लिये एक भीड़ आई थी जिसका अगुआ जूडाज़ था जिसने "उन्हें यह पता दिया था कि जिसको मैं चूमूं वही वह है उसको पकड़ के यत्न से लेजाओ" मार्क १४ (४४) अब इस वाक्य से साफ़ पता लग जाता है कि मसीह को लोग पहचानते नहीं थे और इस वजह से उसी के शिष्य को मिलाकर, जिसके चूमने से मसीह को पहिचान

लिया गया, मसीह को गिरफ़्तार किया । पाठक स्वयम् सोचे कि जिसने ३ वर्ष लगातार घूम घूम कर हज़ारों अलौकिक आश्चर्यजनक करामातें किया था क्या वह ऐसा गुमनाम आदमी रह सकता है कि विना अपने शिष्य के फूटने से न पहचाना जावे ।

घ—ऐसे करामात हर बड़े पुरुष के चरित्र के अङ्ग बनजाते हैं श्रीराम और श्रीकृष्ण के जीवन वृत्तान्तों में सैकड़ों ऐसे उदाहरण मिलते हैं, पुराणों में ऋषि मुनियों के असंख्यात करामात लिखे पड़े हैं, महात्मा बुद्ध भी न बचे और मुहम्मद साहिब का, बोराक़ पर चढ़कर, स्वर्ग जाना तथा उन को चांद के दो टुकड़े करदेना आज दिन करोड़ों मुसलमान मानते हैं। इसी प्रकार बहुत से फ़क़ीर साधु भी करामाती मशहूर हैं जैसे गुरुनानक, बाबा कबीरदास तथा दादू-साहिब अब किस के करामात को सच और किस के करामात को झूंठ मानना चाहिये क्योंकि सभी करामातें एक सदृश धर्म्म पुस्तकों में लिखी हैं और बहुत से लोगों से विश्वास भी की जाती हैं। पाठक महाशय इसको भली प्रकार विचारलें कि मोआजज़े और करामात आज कल के वायु जल में नहीं जन्मते, फूलते और बढ़ते और न पहिले के जमें हुये मोआजज़े और करामात अब बहुत दिन तक कायम रह सकते हैं । यह काल विज्ञान और अन्वेषणा का है और जिस धर्म्म के सिद्धान्त अथवा बुनियाद अन्धविश्वास पर निर्भर और प्राकृतिक नियमों के विपरीत होगा उसको अवश्य मर जाना होगा या बदल कर बुद्धि विद्या और विज्ञान के अनुकूल बनना पड़ेगा ।

३—परन्तु मसीह के सारे अलौकिक करामातों में यदि कोई ऐसा करामात है जिस पर ईसाई धर्म्म का जीवन निर्भर है और जो ईसाई धर्म्म की सचाई की सिद्धि (सबूत) में सब से अधिक प्रामाणिक समझी जाती है वह मसीह का शारीरिक पुनरुत्थान (bodily resurrection) है । सेन्टपाल, जो ईसाई धर्म्म का बड़ा

मशहूर प्रचारक था, अपने पत्र १ कारनथियन्स पर्व्व १५ आ० १४ में लिखता है "यदि मसीह जी नहीं उठा हो तो हमारा सारा उपदेश व्यर्थ है और तुम्हारा विश्वास भी व्यर्थ है" इस से बढ़कर जोर के शब्द और क्या होसकते हैं? इसका अर्थ यही होता है कि यदि मसीह का जी उठना झूंठ या अप्रामाणिक साबित होजावे तो मसीही धर्म्म और इसपर विश्वास करना दोनों व्यर्थ हैं। अब यह देखना अति आवश्यक है कि सचमुच प्रभु मसीह जी उठे लोगों को दर्शन दिये, भोजन और वार्त्तालाप किये।

पृथिवी की जन संख्या १५०००००००० (अर्थात् १ $\frac{१}{२}$ अरब) है। यदि एक शताब्दी मे ३ पीढ़ी का मरजाना मानलिया जावे तो सौवर्षमें ४५०००००००० (अर्थात् ४ $\frac{१}{२}$ अरब) मनुष्य मरजाते हैं। अब अन्वेषण और इतिहास से यह पता लगता है कि मनुष्य जाति पृथिवी पर और इसके सभी भागों में कम से कम १०००० वर्ष से मौजूद है यद्यपि इसके पूर्व भी मनुष्यों की बस्तियां थीं + परन्तु इतना भी मान लिया जावे तो केवल गुणा कर देने से एक स्कूल का विद्यार्थी भी बतला सकता है कि आजतक ४५०००००००० × १०००० अर्थात् ४५००००००००००००० मनुष्य इस पृथिवी पर जन्मे और मर चुके परन्तु एक मनुष्य भी आज तक मर कर नहीं जीवित हुआ। परिवार तबाह होजाते हैं, बालक अनाथ होजाते हैं, माता पिता तड़प २ कर भूमि में सदा के लिये गिरजाते हैं, विधवायें रोती रोती अन्धी होजाती हैं परन्तु मरा हुवा कभी वापस नहीं आता। ऐसी दशा में यह कहा जाता है कि इन ४५००००००००००००० मनुष्यों

+ अभी हालही में प्रो० विलसन ने मनुष्य की एक खोपड़ी जो कमसे कम २५ हज़ार वर्ष पूर्व जीवित थी ब्रिटिश आसोसियेशन आस्ट्रेलिया के सम्मुख पेश किया है। (Vedic Mag. Vol. VIII. 8. p. 660)

में से जो मृत्यु की भेंट हुवे केवल प्रभु मसीह मर कर तीसरे दिन जी उठे और कुछ समय तक रहकर स्वर्ग को चलेगये । अब ऐसी घटना के सबूत के लिये जिस पर कि ईसाई धर्म्म का मरना जीना निर्भर हैं, बड़ी अच्छी शहादत होनी चाहिये जिसमें लेशमात्र भी शंका न होसके ।

प्रभु मसीह के शारीरिक पुनरुत्थान (अर्थात् मरने के पश्चात् जी उठने) के सबूत में नई इञ्जील की पुस्तकें पेश की जाती हैं इन पुस्तकों के विषय में इसके पूर्व लिखा जा चुका है। पाठक महाशय देख चुके होंगे (१) कि १८५ ई० के पूर्व किसी एक भी सुसमाचार का पता नहीं लगता, और (२) यह कि १८५ ई० में पहिले पहिल पेपियस केवल मार्क और माथ्यो सुसमाचार का ज़िक्र करता है परन्तु इन दोनों की अपेक्षा मौखिक रवायतों को अधिक लाभदायक और प्रामाणिक मानता है । अब पाठक स्वयम् विचारें कि एक ऐसी अनहोनी घटना को मार्क और माथ्यो सुसमाचारों के शहादत पर कैसे मान लिया जावे जब कि उस घटना के एक शताब्दी से अधिक समय व्यतीत हो जाने पर यह सुसमाचार लिखे गये और जब कि पेपियस खुद, जो इन को शहादत में पेश करता है, अप्रामाणिक की उपाधि इन्हें दे रहा है । यह तो हुआ मार्क और माथ्यो सुसमाचार की शहादत जो बाक़ी दो सुसमाचारों की अपेक्षा कुछ अधिक प्रमाण रखते है । अब इनके अतिरिक्त सेन्टपाल की चार चिट्ठियां रहीं । यह भी अच्छी शहादत नहीं हो सकतीं और यह तीन कारणों से:—

१—सेन्टपाल जहां तक कि उसके जीवन से पता लगता है, एक अत्यन्त उत्साही और सुगम विश्वासी प्रकृति का पुरुष था । जितना पहिले इसका ईसाई धर्म्म से विरोध था उतना ही कट्टर इसका अनुयायी बनगया । इस परिवर्तन का कारण 'ईश्वरी कृपा' के अति[illegible]क और कुछ पाल के [illegible]त्रों से विदित

नहीं होता। +

२—सेन्टपाल ने मसीह को जीवित अवस्था में नहीं देखा था और न उसकी उस समय उपस्थिति की सिद्धि होती जब कि मसीह का पुनरुत्थान हुआ अथवा जब कि मसीह इस पुनरुत्थान के पश्चात् कुछ दिनों तक जीवित रहकर स्वर्ग को चला गया।

३—सेन्टपाल १ कारि० पर्व्व १५ आ० ८ में स्पष्ट कहता है "और सब के पीछे वह मुझको भी जैसे असमय के जन्मे हुए को दिखाई दिया"। अब इन शब्दों से साफ़ पता लग जाता है कि मसीह सेन्टपाल को ठीक उसी प्रकार से दिखाई दिया था जैसा कि औरों को। और क्रियाओं की पुस्तक से ज्ञात होता है कि स्वप्न अथवा आकाश वाणी द्वारा पाल को विश्वास होगया था कि मैंने मसीह को देख लिया।

प्रश्न तो यह है कि मसीह का शारीरिक पुनरुत्थान हुआ या नहीं। यदि मसीह के पुनरुत्थान से 'आध्यात्मिक पुनरुत्थान' का मतलब है तो इस पुनरुत्थान में कोई विलक्षणता नहीं रह जाती क्योंकि प्रत्येक मतों के प्रवर्तक अपने अपने अनुयायियों के विश्वासानुसार स्वर्ग अथवा किसी पवित्र लोक में जीवित हैं। और सहस्रों नर और नारी अपने मरे हुये सम्बन्धियों से रोज़ ही स्वप्न में मिलते और बात चीत करते हैं। यदि मसीह के शिष्यों अथवा सेन्टपाल ने मसीह को स्वप्न में देख लिया हो तो कोई आश्चर्य नहीं क्योंकि ऐसी बात मनुष्य जाति के तजुरबे के अनुकूल है। परन्तु जब 'शारीरिक पुनरुत्थान' का होना सुसमाचार, बिशप, पादरी और प्रत्येक ईसाई कहते हैं तभी कठिनता होती है क्योंकि ऐसी अनोखी

+ प्रेरितों की क्रियाओं की पुस्तक के २२ पर्व्व में जो घटनायें इस परिवर्तन को लाने वाली लिखी हैं उनका गन्धमात्र भी सेन्टपाल की किसी पत्रों में नहीं मिलता और इसलिये वे शहादत के काम में नहीं लाई जासकतीं।

बात मनुष्य जाति के तजुरबे के अनुकूल नहीं है।

पाठक महाशयों को विदित होगया होगा कि मसीह के शारीरिक पुनरुत्थान के सबूत में मार्क और माथ्यो सुसमाचार को शहादत में पेश नहीं कर सकते क्योंकि ये विश्वसनीय नहीं हैं और सेन्टपाल के पत्रों को पेश करना व्यर्थ है क्योंकि इन से कुछ नहीं साबित होता। परन्तु हम चारों सुसमाचारों के एक एक वाक्य को यदि प्रामाणिक मान लेवें और यह भी मान लेवें कि इन चारो सुसमाचारों को इनके आनुमानिक रचयिताओं ने ठीकठीक वैसा ही बनाया जैसा कि वे हमारे सामने उपस्थित हैं तब भी तो मसीह का पुनरुत्थान सिद्ध नहीं होता जैसा कि इस चित्र से ज्ञात होगाः—

उपर्युक्त चित्र से पाठक भली प्रकार देख लिये होंगे कि इन चारों सुसमाचारों में अत्यन्त पूर्वापर विरोध है और जब कि आज कल के न्यायालय में ऐसी शहादत पर एक पैसे की भी डिगरी नहीं हो सकती तो ईसाई धर्म्म के "मसीही पुनरुत्थान" ऐसा अनोखा और अप्रामाणिक सिद्धान्त कैसे कोई ऐसी शहादत पर मान सकता है ? किसी तरह भी मसीह का शारीरिक पुनरुत्थान साबित नहीं होता और इसलिये सेन्टपाल के कथनानुसार " और जो खीष्ट नहीं जी उठा है तो हमारा उपदेश व्यर्थ है और तुम्हारा विश्वास भी व्यर्थ है " मसीही धर्म्म का उपदेश और इसपर विश्वास करना दोनों व्यर्थ प्रतीत होते हैं।

४—अब यह देखना है कि क्या मसीह परमेश्वर का पुत्र अथवा अवतार और मुक्ति का एकमात्र साधन है इस विषय में सुसमाचारों में भेद है चौथा सुसमाचार तो मसीह को परमेश्वर का अवतार बना देता है और मसीह के चित्र की सादगी, जो प्रथम तीन सुसमाचारों में हम देखते हैं, चौथे सुसमाचार में यूनानी दर्शन और विचारों के रङ्ग में रंगी हुई परिणत मिलती है और यह परिवर्तन इतना पूर्ण और विलक्षण है कि दोनों चित्रों को एक ही पुरुष का चित्र कोई विचारवान् नहीं कह सकता मसीह अपने को क्या कहता है और मुक्ति का साधन किसे बताता है ? इस प्रश्न का उत्तर जान और ल्यूक सुसमाचारों से लेना अनुचित है क्योंकि यह दोनों सुसमाचार अप्रामाणिक हैं जैसा कि पहिले लिखा जा चुका है इस प्रश्न का उत्तर माथ्यो और मार्क में देखना चाहिये परन्तु जब कि माथ्यो की अपेक्षा मार्क, विद्वानों की दृष्टि में कई कारणवश (जिसका वृतान्त पूर्व होचुका है) अधिक आदर और विश्वास का पात्र है, इसलिये इस प्रश्न का उत्तर मार्क से लिया जाता है। उत्तर यह है।

क—मार्क सुसमाचार में एक स्थल भी ऐसा नहीं है जहां

मसीह ने अपने को परमेश्वर का अवतार कहा हो इस सुसमाचार में मसीह ने अपने को हरजगह विशेष मनुष्य का पुत्र कहा है। इसके अतिरिक्त यदि मसीह ने कहीं अपने को परमेश्वर का पुत्र कहा हो तो उससे मसीह का ईश्वर का अवतार होना सिद्ध नहीं होता।

ख—मार्क में अनेकानेक स्थलों में और स्पष्ट शब्दों में मसीह ने अपना गहरा विश्वास परमेश्वर में प्रकट किया है।

उदाहरण में देखिये पर्व्व ३ (३५), ६ (३७), १० (१८), ११ (२२, २५, २६,) १४ (६१–६२), १५ (३४)।

ग—मुक्ति का साधन परमेश्वर पर श्रद्धा भक्ति और पड़ोसी का प्रेम करना मसीह ने बताया है देखिये पर्व्व १२ (२६-३१) ऐसा एक स्थल भी इसमें नहीं मिलता जहां मसीह ने अपने को मुक्ति का साधन बताया हो।

अध्याय ५

परिणाम—

प्रथम के चार अध्यायों से यह विदित होगया कि मसीही धर्म्म की पुरानी अथवा नई इञ्जील न तो आस्मानी किताब होसकती है और न अपनी रचना समय और रचयिता का कुछ पता ही देती है। जहां पुरानी इञ्जील की विषय सूची इनको धर्म्म-ग्रन्थ के पवित्र सिंहासन से अवश्य उतार देती है वहां साथ ही नई इञ्जील के मोआजज़ो, प्रतों के क़िस्से और पुनरुत्थान का आश्चर्य-जनक वृत्तान्त इस नये धर्म्मग्रन्थ (अर्थात् नई इञ्जील) को केवल अन्धविश्वास का पात्र बनादेते हैं। यदि मसीह की प्रशंसा उसकी शिक्षाओं के ऊपर करनी है तो मसीही धर्म का सम्बन्ध पुराने धर्म्म ग्रन्थ से कुछ नहीं रहजाता क्योंकि उसका ईश्वर के विषय में विचार जो एक प्रकार उसके सम्पूर्ण शक्तियों का केन्द्र था

मूसाई धर्म्म (Judaism) से उत्पन्न नहीं था परन्तु उसके मस्तिष्क से, रीनान के मतानुसार, निकला हुवा था+ मसीह का ईश्वर "एक पक्षपाती स्वतन्त्र व्यक्ति (despot) नहीं है जिसने इसराईल को अपनी जाति चुन लिया है और विशेषकर उन्हीं की रक्षा करता है" । × मसीह की शिक्षा की रीति न तो यूनानियों से मिलती है और न इबरानियों से ही विशेष सम्बन्ध रखती है ।

मसीह के जीवन पर एक परदा पड़ा हुवा है । मसीह ने ३० वर्ष की आयु के बाद अपना प्रचार 'आरम्भ किया परन्तु किन शक्तियों, किन शिक्षाओं और किन महात्माओं के सदुपदेशों ने इस पालेस्टाईन निवासी को ऐसे शुद्ध और उत्साही विचारों से (ईश्वर, मनुष्य, समाज के विषय में) सज्जित किया जिनका उसके आगमन के पूर्व उस भूमि में लेशमात्र भी चिन्ह नहीं मिलता ? यह एक प्रश्न है जिसका उत्तर उस परदे को उठाने से प्राप्त होसकता है । अक्सर लेखकों ने, जिनमें रीनान मुख्य है, इसका उत्तर केवल यह दिया है कि मसीह के अद्भुत मस्तिष्क ने आविष्कार किया । परन्तु जब कि बालक मसीह के पश्चात् और प्रचारक मसीह के पूर्व किसी आत्मविवेकी और सत्याभिलाषी मसीह का कोई हाल नहीं मिलता तो ऐसी दशा में इन लेखकों का एक 'आविष्कारक मसीह' का आविष्कार करके इस कमी को पूरा कर देना सर्वथा अनुचित और निराधार है । वह प्रसिद्ध

+ "A high conception of the Divinity—which he did not owe to Judaism and which seems to have been in all its parts the creation of his great mind—was in a manner the source of all his power. "Renan's Life of Jesus" Chap v. par. iii.

× "The God of Jesus is not the partial despot who has chosen Israel for his people and specially protects them." Renan's Life of Jesus," Chap. VI. par. VI.

रूसीयात्री नोटोविच ने तो अपनी पुस्तक "Unknown life of Christ" (मसीह की ना मालूम ज़िन्दगी) में तिब्बत के हीमिस मठ के पुस्तकों के आधार पर यह सिद्ध किया है कि मसीह ने धर्म्म की शिक्षा तिब्बत और भारतवर्ष में प्राप्त की जहां १३ वर्ष की अवस्था में आकर २६ वर्ष की अवस्था तक रहा । ल्यूक सुसमाचार द्वितीय पर्व्व में मसीह के बारह वर्ष तक का हाल देता है परन्तु इस समय के पश्चात् का हाल कुछ नहीं बताता सिवाय इसके कि " और मसीह की बुद्धि और डील और उसपर ईश्वर का और मनुष्यों का अनुग्रह बढ़ता गया (पर्व्व २ आ० ५२) "

मसीह के जीवन का वृतान्त जो तिब्बत के लामा लोगों से नोटोविच को प्राप्त हुआ कहां तक मानने योग्य है यह तो यहां प्रसंग नहीं है, परन्तु उसके विरोधी समालोचक उसके इस पक्ष को अब तक निर्मूल नहीं साबित करसके ।

गिरनार के अशोक के स्तम्भों से बुद्धधर्म्म के प्रचारकों का (मसीह के जन्म के लगभग वर्ष २५० पहिले) अशोक राजा के समय में सोरिया जाना तो स्पष्ट है । मसीह के समय के एक शताब्दी पूर्व सारे पालेस्टाइन देश में एक यसीनीज़ मत का प्रचलित होना सभी मानते हैं और मिश्रदेश में भी इसकी शाखा 'थिराप्यूटस' (Therapeuts) नाम को जारी थी + ईस यसीनीज़ मत को आजकल की अन्वेषणा ने बुद्धधर्म्म की शाखा निश्चय करदिया है और जान बपतिस्मावाला भी इसी यसीनीज़ मत का अनुयायी था और इस जान ने मसीह को भी बपतिस्मा दिया था । अब उपर्युक्त बातों को ध्यान में रखकर जब हम देखते हैं कि मसीह के ईश्वर सम्बन्धी विचार, आचार सम्बन्धी निर्मल उपदेश

+ " The Therapentae of Philo are a branch of the Essenes. Their name appears to be but a greek translation of that of the Essenes." Renan's Life of Jesus.

(Moral precepts), शिक्षाप्रद कहानियां (parables) यहूदी धर्म (Judaism) के भूमि से उत्पन्न नहीं हुए और जब हम पाते हैं कि ऐसे विचार, उपदेश और कहानियां बुद्धधर्म और वेद से बहुत मिलते हैं तो यह अत्यन्त सम्भव (करीब करीब निश्चय) प्रतीत होता है कि मसीह ने अपने जीवन का वह भाग जिसका सुसमाचारों से पता नहीं लगता तिब्बत और भारतवर्ष में व्यतीत किया। ख़ैर जो कुछ भी हो मसीह के जीवन को यदि हम एक दिन से उपमा दें तो यह कहना उचित होगा कि सूर्य्यास्त का ही समय ऐसा है जिसका हाल हमको मालूम है परन्तु सूर्य्योदय के पश्चात् और सूर्य्यास्त के कुछ काल पहिले तक का हाल एक भेद के बादल में छिपा हुआ है। क्या मसीह के शिष्यों को भी मसीह के जीवन का यह भाग मालूम न था ? क्या अपने जीवन के इस भाग के विषय में मसीह ने स्वयम् किसीसे कुछ न कहा होगा ? यह भी एक सबूत है कि सुसमाचारों के बनाने वाले मसीह के शिष्य नहीं थे नहीं तो जीवन के इस भाग का कुछ न कुछ पता लगता।

मसीह के शिष्यों का मसीह का जीवन और उपदेश कुछ भी न लिखना कोई आश्चर्यजनक बात नहीं है क्योंकि मसीह के मृत्यु के पश्चात् उसके अनुयायी, उसकी स्वयं पेशीनगोई के अनुसार [illegible] के शीघ्र अन्त होजाने की बाट देखरहे थे { देखिये माथ्या पर्व्व [illegible] (२७-२८) ; मार्क पर्व्व ८ (३८)—९ (१) ; ल्यूक ९ (२७), सेन्ट पाल १ थिसालोनियन्स ४ (१४-१८) १ कारिन्थियन्स पर्व्व १५ (२४-२८), (५१-५२) } यहां यह लिखना अनावश्यक है कि मसीह की पेशीनगोई और उसके अनुयाइयों की आशा निश्चय किये हुए समय के भीतर पूरी नहीं हुई और आज करीब दो सहस्र वर्ष व्यतीत होगये परन्तु "प्रभु आपही ऊंचे शब्द सहित प्रधान दूत के शब्द सहित और ईश्वर की तुरही सहित" अब तक स्वर्ग से न

उतरे । यही कारण है कि ईसाइयों की पहिली पीढ़ी ने जिनको मसीह के जीवन का सबहाल अवश्य मालूम रहा होगा परन्तु जो सदा इस आशा में थे कि मसीह के स्वर्ग से उतरने पर "ख्रीष्ट में जो मरचुके हैं वह पहिले उठेंगे और हम सब जो जीवित और बचे रहेंगे एक संग उनके साथ प्रभु से मिलने को मेघों में आकाश पर उठालिये जायेंगे १ थिस० ४ (१७-१८), कोई ग्रन्थ मसीह के जीवन अथवा उपदेश पर आनेवाली नसलों के शिक्षार्थ लिखने की आवश्यक्ता नहीं समझी ।+

अब अन्त में पाठक महाशय पक्षपात छोड़कर और सत्य को लक्ष में रखकर यह स्वयम् विचार लेवें कि मसीही धर्म्म का ईश्वरी धर्म्म और सच्चा मार्ग होना सिद्ध होता है वा नहीं । यह सदा याद रखना चाहिये कि परमेश्वर की सृष्टि में असत्य की मृत्यु होती है और मनुष्य की रुचि स्वभाव से ही सत्य की ओर है । मसीही धर्म्म में सत्य अन्श जितना है वह मसीह के पूर्व से ही है और वह कायम रहेगा और उसको रहना भी चाहिये परन्तु इसका असत्य-अंश मर रहा है और अवश्य एक दिन मर जावेगा चाहे हम इसके प्रतिकूल कितनाहीं यत्न करें ।

अब यह स्पष्ट होगया कि पुरानी इञ्जील धर्म्मग्रंथ की हैसियत से सर्वथा अप्रामाणिक है और नई इञ्जील की शहादत कोई मूल्य नहीं रखती तो मसीही धर्म्म किस के आधार पर अपने को प्रामाणिक धर्म्म कह सकता है? यह पाठक स्वयम निश्चय कर

+ "The first generation of Christians lived in the daily expectation that Christ would return from heaven..............Men who imagined that they might any moment be cought up to meet the Lord in the air were not likely to take steps for the instruction of generations that might come after them." En. Br. vol iii. p 872.

लेवें। दोनों इञ्जीलों को गम्भीर दृष्टि से देखने और प्राचीन समकालीन लेखों के द्वारा विचार करने पर यह नहीं साबित होता कि मसीह के आगमन की पेशीनगोई हुई थी, या मसीह कुंवारी मरियम देवी से, पवित्र आत्मा द्वारा, पैदा हुआ था, या मसीह ने मोआज़्ज़े किये थे या अपने को परमेश्वर का अवतार या मुक्ति का एक मात्र साधन कहा था। अंत को मसीही धर्म्म का मुख्य सिद्धान्त शारीरिक पुनरुत्थान युक्ति अथवा प्रमाण दोनों से गिरजाता है और सेन्ट पाल के कथनानुसार मसीही धर्म्म का "सारा प्रचार व्यर्थ है।"

इतिशम्।

पुस्तक मिलने का पता—

(१) रामचन्द्रप्रसाद वर्मा बी. ए, एल्. एल्. बी.

हेडमास्टर गुरुकुल, वृन्दावन ।

---

(२) बाबू हरिश्चन्द्र वर्मा, रायपुर; गाजीपुर ।

॥ ओ३म् ॥

आर्यसमाज के नियम ।

१—सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सब का आदि मूल परमेश्वर है ।

२—ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है उसी की उपासना करनी योग्य है ।

३—वेद सत्यविद्याओं का पुस्तक है वेद का पढ़ना, पढ़ाना, सुनना और सुनाना आर्यों का परम धर्म है ।

४—सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये ।

५—सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार के करने चाहियें ।

६—संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना ।

७—सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्त्तना चाहिये ।

८—अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये ।

९—प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिये किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये ।

१०—सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें ।